द्वितीय अध्याय

भीष्म साहनी के उपन्यासों का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय

"भीष्म साहनी के उपन्यासों का सामान्य परिचय"

तमस

प्रस्तावना

हमारे देश में राजनीतिक आन्दोलन होने लगे थे। इनमें अंग्रेजों का सहभाग था। उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए भारतीय लोगों को राजनीतिक स्वतंत्रता दे दी। नगर परिषदों से लेकर प्रान्तीय स्तरों तक उन्हें छूट दी जाने लगी। इसका अर्थ था सत्ता के निकट जाना। सत्ता में हिस्सा मिलने का अर्थ है - विशेषाधिकारों को प्राप्त कर लेना। शिक्षा की स्पर्धा में हिंदू मुसलमानों से अधिक थे। इन हिंदुओं की संख्या भी अधिक थी। इन सब कारणों से हिंदुओं को पदों पर लेने लगे। इन सबका परिणाम शिक्षित मुस्लिमों पर ज़्यादा होने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि साम्प्रदायिकता बढ़ने लगी। इन सबका फायदा अंग्रेजों को मिलता ही रहा।

"तमस" उपन्यास की कथा में जो प्रसंग, संदर्भ और निष्कर्ष उभरते हैं उनके कारण यह कथा बीसवीं शताब्दी के भारत की कथा हो जाती है।

पंजाब और बंगाल के विभाजन को काँग्रेस तैयार हो गई। यह विभाजन हिंसात्मक घटनाओं की समाप्ति के लिए था। हिंदू समझते थे, मुस्लिमों की जरूरत नही और मुस्लिम समझने लगे हिंदुओं की जरूरत नहीं। छः महिने तक यह घटनाएँ चलती ही रही। इन दिनों संघर्षों में सर्वसामान्य जनता धोखे में रही।

इसप्रकार "तमस" उपन्यास की कड़ी महत्त्वपूर्ण है। तमस के पूर्व "यशपाल" का "झूठा सच" यज्ञदत्त शर्मा का "इन्सान", गुरूदत्त का "देश की हत्या", रामानन्द सागर का "और इन्सान मर गया", कमलेश्वर का "लौटे हुए मुसाफिर" इसप्रकार

के अनेक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

भीष्म साहनी पंजाब के हैं और विभाजन के समय वे उसी प्रदेश में थे। पाँच दिनों की विभाजन की परिस्थिति का इस उपन्यास में समटने का बहुत ही सफल प्रयास किया गया है।

प्रमुख उपन्यास

तमस

यह भीष्म साहनी का उपन्यास अन्धकारपूर्ण, अराजकतापूर्ण, कुछ ही दिनों की कथा कहनेवाला उपन्यास है। साम्प्रदायिक विकृति को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। इस तरह दो उपन्यास हमारे सामने हैं - यशपाल का "झूठा सच" और डॉ॰राही मासूस रजा का "आधा गाँव" इनमें साम्प्रदायिकता का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है।

"आज़ादी के ठीक पहले साम्प्रदायिकता की बैसाखियाँ लगाकर पाशविकता का जो नंगा नाच हुआ उसके पाँच दिनों की कथा को तमस के लेखक ने इस खूबी से बुना है कि साम्प्रदायिकता का तार-तार उद्घाटित हो।"[1]

हमारे देश की साम्प्रदायिकता का निर्माता अंग्रज है, इतिहास में इसके पहले इसतरह के दंगे नहीं मिलते, हिंदू, उर्दू की समस्या को उभारना, हिंदू-मुस्लिम मे दरार पैदा करना, यह सब अंग्रेजों का काम है। इसप्रकार "अंग्रेज शासक वक्त-बेवक्त हिंदू-मुसलमान दोनों को भड़काकर अपना उल्लू सीधा कर लिया करते थे।"[2] इन सब के शिकार होते हैं मध्यवर्गीय और सामान्य लोग ।

"तमस" उपन्यास विविध घटनाओं और योजनाबद्ध पद्धति से प्रस्तुत किया गया है। सुअर मारने की घटना, साम्प्रदायिक नफ़रत की आग, इर्षा, घृणा, मारकाट, खून, अत्याचार, बलात्कार आदि घटनाओं की भरमार है। साथ में मानवीयता, प्रेम, भक्ति, श्रद्धा से युक्त घटनाओं का संकेतात्मक चित्रण भी कुशलता से किया है। यह घटनाएँ विश्रृंखल उखड़ी-उखड़ी है लेकिन कथानक को प्रभावी रूप में स्पष्ट

करती है।

1973 में लिखा हुआ भीष्म साहनी का "तमस" उपन्यास साम्प्रदायिक दंगो तथा भारत पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। 1975 में साहित्य अकादमी द्वारा इसे पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

इस में भीष्मजी ने जिस विभाजन के दुर्भाग्यपूर्ण करूण इतिहास को लिया है उसे "तमस" के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। धार्मिक आडम्बर, मिथ्या, आदर्श, झूठे सिद्धान्त, गैर साम्प्रदायिक सामाजिक दृष्टिकोण का चित्रण इसमें यथार्थ के धरातल पर किया है। धर्माडम्बर से मनुष्य कमजोर एवं आत्मनिर्वासित हो जाता है।

भारतीय समाज रचना अनेक साम्प्रदायों में तथा वर्गों में बाँटी गयी है। बाह्य शक्तियों के आक्रमण के कारण इसमें अनेक परिवर्तन हुए हैं। वर्ग बनते हैं उनमें अलगाव या बिखराव की स्थिति प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक जैसी की वैसी है। जिसके भयानक परिणाम समाज को खासकर गरीब, असहाय लोगों को भुगतने पड़ते हैं। परिणामतः मानवीय जीवन तथा समाजावस्था विकृत बनती है। इन विकृतियों के कारण मनुष्य सामर्थ्यहीन है। भीष्मजी ने इसका सूक्ष्म चित्रण "तमस" में किया है।

"तमस" का अर्थ है -"अंधकार, अज्ञान का अंधःकार "तम" शब्द से इसकी व्युत्पत्ती हुई है। तम गुणों से युक्त व्यक्ति बुरे से भी बुरे कार्य करता है।[3] इस उपन्यास में नामकरण की सार्थकता भी मिलती है।

"तमस" उपन्यास स्वानुभूति परक उपन्यास है। लेखक का जन्म जिस वातावरण में हुआ उसका प्रभाव आसपास की घटनाओं का प्रभाव इस उपन्यास में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं को लेखक ने प्रभावी रूप में अंकन किया गया है। भारत विभाजन के समय जो भयानक दंगे हुए, जिस में अंग्रेजी नीति ने किस प्रकार अपनी भूमिका निभायी इसका संवेदनशील चित्रण किया है। शिल्पविधान की दृष्टि से बहुत ही संपन्न एवं कई गुणों से युक्त

यह उपन्यास है। कथानक, चरित्रबोध, संवाद, देशकाल वातावरण तथा युगबोध, भाषा, उद्देश्य एवं दृष्टिबोध का सार्थक चित्रण इसमें मिलता है।

2.1 तमस का कथानक संक्षेप में

"तमस" उपन्यास का कथानक देश-विभाजन की पृष्ठभूमि एवं साम्प्रदायिक दंगो पर आधारित है। इसमें सिर्फ कल्पना नही है तो सच्ची घटनाओं के आधार पर इसका ताना-बाना बुना है, जो हमारे हृदय को झंकृत करता है। साम्प्रदायिकता के कारण मानवता में पशुवृत्तियों के दर्शन होते हैं। इसका चित्रण भीष्म साहनी ने अपने तमस इस उपन्यास में किया है। आज इस युग में भी समाज को इन वृत्तियों का सामना करना पड़ता है। साम्प्रदायिकता की घटनाएँ आज भी हो रही हैं। आज भी वह जहर हमारे समाज में फैला हुआ है।

हिंदू मुस्लिमों को भड़काने के पीछे अंग्रेज राजनीति भी सक्रिय है। क्योंकि अंग्रेजों ने "फूट डालो और राज करो" नीति अपनायी थी। इसी वजह से उन्होंने 200 वर्ष तक भारत पर राज किया।

"तमस" इस उपन्यास का प्रारंभ एक बंद कोठरी में सुअर मारने की घटना से होता है। इसका कालक्षेत्र पंजाब है। तमस केवल पाँच दिनों की कहानी है। नत्थू को सुअर मारना जरूरी था लेकिन सुअर मारना इतना आसान नहीं था। जब भी नत्थू सुअर पर छुरा चलाता था, तब छुरे की नोक चर्बी की तहों को काटकर लौट आती थी, आंतडियों तक पहुँच ही नहीं पाती थी। अंग्रेजी अफसर के इशारे पर मुराद अली ने नत्थू को पाँच रूपये देकर सुअर मारने को कहा था। उन्होंने उसे झूठ बोलकर कहा डाक्टरी काम के लिए एक मरा हुआ सुअर चाहिए। लेकिन सुअर को मारकर मस्जिद के सामने फेंक दिया जाता है। इसी घटना से साम्प्रदायिकता और दंगों का जो भयानक रूप उपन्यास में चित्रित किया है, जो सुसंबद्धता के साथ लेखक ने निर्माण किया है।

दूसरे दिन सुबह कॉंग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओं ने प्रभात फेरी का आयोजन किया। आज उन्होंने निश्चय किया था कि मुहल्ले की सफाई आवश्यक है, जिसके लिए नालियाँ साफ करने का निर्णय लिया था। इस कमेटी के सदस्य हैं बख्शी मेहता, रामदास, कश्मीरीलाल शंकर, जनरैल आदि। जरनैल पक्का कॉंग्रेसी है। वह झंण्डा उठाकर अग्रस्थान प्राप्त कर भाषण देता है और वे नालियाँ साफ करने चले जाते हैं। जब मुसलमान मुहल्ले में आ जाते हैं, तब उनकी प्रशंसा भी की जाती है। लेकिन देखते-देखते वातावरण एकदम बदल जाता है। इधर उधर उड़ते हुए पत्थर आकर उनके पास गिरने लगते हैं।

मस्ज़िद की सीढ़ी पर सुअर फेंक दिया था। जिसके परिणामस्वरूप मुसलमानों द्वारा गाय को काटकर उसके अंग माई सत्तों की धर्मशाला के बाहर फेंक दिया। लोगों ने उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त की।

सभी ने शान्ति की कामना की बुजुर्ग लोग कार्यकर्ता युवकों को उपदेश देते थे कि अंग्रेज अफ़सर के पास जाकर इन दंगों को रोकने की आवश्यकता है। तभी हिंदू मुस्लिम नेता अंग्रेजी कमिश्नर रिचर्ड के कोठी पर पहुँचते हैं और रिचर्ड के पास शांन्ति स्थापना की माँग करते हैं। इस बात को रिचर्ड इन्कार करता है और वह उन लोगों के साथ समझौता कर उन्हें गांधी और नेहरू के पास जाने की सलाह देता है।

इन सभी प्रयासों के बाद जिन बातों का डर था वही हुआ। सभी लोग साम्प्रदायिकता के नाम पर एक-दूसरे का गला घोटने पर तुले हैं। मुसलमान मस्ज़िद में शस्त्र इकट्ठा करने लगे तो हिंदू-सिख अपने-अपने गुरूद्वारों में युवकों की दिक्षा देने का काम प्रारंभ हुआ।

प्रथम खण्ड

साम्प्रदायिकता जो प्रारंभ हुआ उसका परिणाम बहुत बुरा हुआ। मंण्डी जलायी गयी, मारकाट हुई। लाखों का नुकसान हुआ। दो हिंदू मारे गये हैं, तो तीन मुसलमान। इस तरह वे एक-दूसरे के मुहल्ले में जाने के लिए डरने लगे।

देवव्रत ने हिन्दुओं के युवकों को दिक्षा देने की जिम्मेदारी ली। लाला लक्ष्मीनारायण का पन्द्रह वर्ष का लड़का रणवीर उनका शिष्य बना। उसने गुरू के मुख से अनेक वीरों की कहानियाँ सुनी। अग्नि बाण और मेघ बाण के गुण सुने। विमान, बम बनाने का तरिका वेदों में बताया गया है, यह बात भी सुनी। हिमालय के योगी की कथा, योगशक्ति का चमत्कार उसे मालूम था। योगीराज ने योगशक्ति से म्लेंछ को भस्म कर दिया था। ऐसी नयी नयी बातें सुनी थी। रणवीर जिज्ञासू लड़का था। दृढ संकल्प की उसमें कमी नहीं थी। मास्टर ने उसे मुर्गी काटने को कहा जिससे वे उसकी मानसिकता दृढता की परीक्षा लेना चाहते थे। युवको के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा की आवश्यकता है, यह सुनकर रणवीर साहसी बना। उसने अपने साथियों की मदद से शस्त्रगार बना लिया। तेल के डिब्बे हलवाई की कडाई भी लायी गयी। लाठियाँ, तलवारें, छुरे का भी इंतजाम किया।

सारा माहौल आतंक-ग्रस्त बना। इन सभी भयानक बातों को देखकर नत्थू घबरा गया। उसे लगा इन सब घटनाओं का जिम्मेदार वह खुद है। बाजार बंद हो गये। खबर मिली कि पूल के पार एक हिंदू का कत्ल कर दिया है। जिससे तनाव बढ़ता ही गया, "अल्ला हो अकबर" तथा "हर हर महादेव" जैसे नारों से सारा शहर गूँज उठा। आँखों में भय और संशय दिखाई देने लगा। घर, दूकान, कारोबार, स्कूल, दफ्तर सब ठप्प हो गये थे। रिचर्ड और लीजा की बातचीत भी इन्ही साम्प्रदायिक दंगो पर चल रही थी। रिचर्ड ने बता दिया कि , "नस्ल सब की एक ही थी। वे लोग जो आर्य कहलाते थे और हजार वर्ष पहले यहाँ पर आये। सभी एक ही मूल जाति के लोग थे।"[4] ऐसे भाई-भाई लोग साम्प्रदायिकता की संकीर्ण विचारधारा से ग्रस्त होकर आपस में लड़ रहे थे। लोगों की प्रतिक्रिया थी कि यह सब शरारत अंग्रेजों की है। जो भाई-भाई को आपस में लड़ाता है

और स्वयं मजा चाखता है।

शाहनवाज धीर गंभीर दुनियादार आदमी था। रघुनाथ उसका हिंदू दोस्त था। शाहनवाज उसकी मदद करता है। उसे सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देता है। लेकिन इस सौजन्यशील वृत्ति के पीछे राक्षसी वृत्ति भी विद्यमान है, जिसका परिचय नौकर मिलखी के साथ किये गये बर्ताव से मिलता है। वह गरीब मिलखी की पीठ में जोरों से लात जमा देता है, जो उसकी हिंदुओं के प्रति संचित घृणा का द्योतक है।

युवा लोगों की राजनीति का शिकार एक गरीब इश्रफ्लेल बनता है। वह इन बालकों का अबोध समझदार समझा-बुझाने की बात कर रहा था, इतने में उसकी आंतडियों में इंद्रने चाकू फँसा दिया था, जिसकी शिक्षा उनके गुरू द्वारा मिली थी। इन सभी घटनाओं की जिम्मेदारी नत्थू अपने ऊपर ले लेता है।

इन घटनाओं का जो ताना-बाना हमारे सामने चित्रसा खड़ा कर कथा का क्रमबद्ध विकास कर देता है। वे सभी घटनाएँ साम्प्रदायिकता, फिसाद, अंग्रेज नीति की ओर संकेत कर देती है। इन बिखरी घटनाओं के द्वारा हमारे बिखरे-बिखरे जन-जीवन-चित्र अंकित किये हैं।

द्वितीय खण्ड

इस खंड का प्रारंभ ढोल इलाहबख्श ग्राम में घटित होता है। शहर से आनेवाली बस दोपहर तक आयी ही नहीं थी। यहाँ हरनामसिंह की चाय की दुकान थी। सारा गांव मुसलमानों का था। हरनाम और उसकी पत्नी दोनों सिख थे। बंतो को खतरे का आभास होने लगा। लेकिन हरनामसिंह को विश्वास था कि कोई भी मुसलमान उसके साथ बुरा कार्य नहीं करेगा क्योंकि उसे मुसलमानों पर भरोसा था। गाँव का करीम खान उनका हमदर्दी था, उसने दोपहर को आकर खबर दी कि बाहर के लोग आने की संभावना है, गाँव छोड़कर चले जाओ। करीम खान का इन बातों से हरनाम का विश्वास टूट गया। दोनो पति-पत्नी अपनी पुंजी और बंदूक लेकर निकल पड़े। बाहर का माहौल उन्हे अपरिचित था। उनके पीछे लोगों ने उनकी दुकान लूट कर उसे आग लगा दी।

वे दोनों रात भर चलते रहे। सवेरा होते-होते ढोक मुरीदपुर में पहूँचे गये। वहाँ वे एक मुसलमान परिवार में शरण लेते हैं। राजो उन्हें पनाह देती है और उनके प्राणों की रक्षा भी करती है। राजो की मानवीयता और सहृदयता की झलक मिलती है। उन दोनों का पुत्र इकबालसिंह को जबर्दस्ती मुसलमान बना दिया जाता है। जो मुसलमानों की क्रूरता का परिचय देता है।

सैयदपुर के गुरूद्वारे का चित्र लेखक ने अंकित किया है। गुरूद्वारा लोगों से भरा हुआ है। सिक्ख संगत मोर्चा लेने की तैयारी में हैं। स्त्री-पुरूष पूरी तरह आत्मबलिदान के लिए तैयार थे। उन्होंने शास्त्रास्त्र भी इकट्ठे किए थे। स्त्रियों के कमर में कटारें लटक रहीं थी। इसी गुरूद्वारे में हरनाम सिंह अपनी पत्नी के साथ पहुँचा। उनकी बेटी जसबीर कौर भी वहाँ थी। गुरूद्वारा गंभीर लग रहा था। इसी गुरूद्वारे पर मुसलमान तुर्कों ने हमला किया। यह युद्ध दो दिनों और दो रातों तक चलता रहा। गुरूद्वारे का असला समाप्त हो चुका था और लड़ना नामुमकिन हुआ और सिक्खों का संपर्क कट गया। तभी सिखों ने पैसे देकर समझौता करने का निश्चय किया। लेकिन वे उसमें असफल हुए। सिखों ने तलवार से लड़ने का निश्चय किया और बाहर चले गये। स्त्रियों ने गुरूद्वारे से बाहर ढलान के नीचे बने कुएँ में अपने बच्चों सहित प्राण दिए। चारों तरफ युद्ध का भीषण वातावरण फैला गया। गलियाँ सुनसान पड़ी थी। आसमान में गिद्ध मंडरा रहे थे। लाशों का ढेर लगा हुआ था। पाँच दिनों में साम्प्रदायिकता के नाम पर सैकडों मारे गए। हजारो जख्मी हुए, हजारों बेघर हो गए। लाखों की संपत्ति नष्ट हो गयी।

117 गाँव और शहर की बरबादी हुई। आकाश में हवाई जहाज मँडराने लगा। लोग बाहर आकर उसे देखने लगे। कस्बे का माहौल बदल गया। फिसाद रोकने का श्रेय अंग्रजों को मिला। फिसादों के चौथे दिन अंग्रेज अफ़सर के द्वारा कर्फ्यु लगाया गया। रिफयूजी कैम्प खोले गये। लाशें ठिकाने लगायी गयी। दोनो समुदायों के लोग अपने-अपने धर्म स्थान को धो-धोकर साफ करने लगे। नुकसान की पूछ-ताछ होने लगी।

"गरीब कितने मरे और खाते-पिते कितने मरे" इसका ब्यौरा पुछा गया। कोई घर-बार छोड जा रहा है। तो कोई उसे खरीद रहा है।

अमन कमेटी बनवायी गयी है। उसमें सभी सिमासी नुमाइन्दे {विवादे के बाद} शामिल हुए। शाहनवाज ने बस का इन्तजाम किया जिस पर लाउड स्पीकर, माइक्रोफोन लगाया गया। छत पर कॉंग्रेस और मुस्लिम लीग के झंण्डे लगाये थे। लोगों ने देखा कि एक आदमी हाथ में माइक्रोफोन लिए बैठा था वह मुराद अली था। जिसने प्रारंभ में नत्थू द्वारा सुअर मरवा दिया था, जिसका इतना भीषण परिणाम हुआ था। नत्थू भी इन दंगों का शिकार बन गया था। अब मुराद अली ने नारे लगाना शुरू कर दिया और अमन की बस शांति अभियान पर निकल पड़ी। मुराद अली का व्यंग्यात्मक चित्रण बहुत ही प्रभावी बना गया है।

राजनीतिक तथा सामाजिक वातावरण का स्थितियों का विचारधाराओं का व्यक्ति-व्यक्ति की भिन्न भिन्न प्रवृत्तियों का गहन, गंभीर यथार्थ चित्रण भीष्मजी ने उद्‌घाटित किया है। धर्म की आड में नफरत की ज्वाला कितनी भयंकर होती है इसके पीछे साम्प्रदायिक शक्तियाँ कैसी बनी इन बातों को लेखक ने प्रभावी रूप में चित्रित किया है। भय के कारण मुसलमान भारत छोड़कर पाकिस्तान गये, हिंदू पाकिस्तान छोडकर भारत आ गये। यह वास्तविक जीवन यथार्थ है। आगजनी, खून, अत्याचार से भरा यह इतिहास बहुत ही भयानक था।

निष्कर्ष

"तमस" उपन्यास में साम्प्रदायिकता और सामाजिक दंगों को लेकर लिखा गया उपन्यास है। साम्प्रदायिकता की आग में झुलसता हुआ समाज आंतकग्रस्त लोगों का इस में चित्रण है। भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में काल्पनिकता कम आँखों देखी सच्ची घटनाओं को प्रस्तुत किया है। धर्म के नाम पर आदमी के भीतर छिपी पशुवृत्तियों का प्रभावी चित्रण भीष्मजी ने किया है। इसप्रकार की घटनाएँ सिर्फ इतिहास में ही हुई ऐसी बात नहीं तो आज भी साम्प्रदायिकता का विष हमारे समाज में फैला हुआ है।

इस कथानक में अनेक भयावह घटनाएँ हैं। स्त्रियों का कुएँ में कूदना, सुअर मारने की घटना, इसमें बेकसूर लोगों के साथ बहुत भयावह बाते हुई हैं। इसमें हर एक घटना साम्प्रदायिकता की निरर्थकता को प्रकट करती है।

इसमें जो घटनाएँ हैं उससे लेखक पूरी तरह से परिचित है। उन्होंने अपनी आँखों से उन्हें देखा है। मण्डी की आग दूसरे धर्मों के लोगों को भड़काने के लिए की हुई मुसलमानों द्वारा हिंदुओं पर किए गये अत्याचार कॉंग्रेस मुस्लिम लीग का संघर्ष, अंग्रेजों की कूटनीति, स्वार्थान्धता, स्त्रियों के साथ बुरे बर्ताव, अमीर-गरीब भेदभाव का जो चित्रण है, वह हमारे समाज पर छाया हुआ "तमस" ही है। "तमस" का कथानक सभी गुणों से युक्त कथानक है।

तमस के प्रमुख पात्र

प्रेमचंदजी उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र समझते हैं। मानव चरित्र को भिन्न-भिन्न पहलुओं का चित्रण कर उपन्यासकार जीवन-दर्शन को स्पष्ट कर देता है। जिनमें पात्रों का उत्थान पतन, उतार -चढाव, घात-प्रतिघात, द्वंद आदि जीवन संघर्ष को स्पष्ट कर देता है। यह चित्रांकन दो पद्धतियों से किया जाता है। उपन्यासकार प्रत्यक्ष रूप में स्वयं उन पात्रों की जानकारी देता है, तो कभी उन्हें बोलने का अवसर देकर पात्रों का अप्रत्यक्ष रूप में चरित्र स्पष्ट कर देता है।

पात्रों का बाह्य व्यक्तित्व स्पष्ट करते समय वेशभूषा, शरीर रचना, भाषा, रहन-सहन आदि का सूक्ष्म चित्रण लेखक करता है और उनका आन्तरिक व्यक्तित्व स्पष्ट करने के लिए बौद्धिक ऊहापोह का स्पष्टीकरण कर देता है। जिसमें भावुकता भी होती है। चारित्रिक विशेषताओं की सफलता पाठकों के हृदय को प्रभावित करने पर निर्भर होती है।

तमस में सभी प्रकार के पात्र दिखाई देते हैं। इनमें क्षेत्रिय आधार पर, शहरी पात्र, ग्रामीण पात्र, धर्म के आधार पर भी पात्र हैं। हिंदू, मुसलमान,

सिक्ख, अंग्रेजी, आदि पात्र हैं। इस उपन्यास में गौण पात्र, नगण्य पात्र भी हैं। लीग के आधार पर स्त्री-पुरूष पात्र हैं। विचारधारा के आधार पर कॉंग्रेस, कम्युनिस्ट, मुस्लीम लीग, आर्य समाजी आदि पात्र भी हैं।

उपन्यास के पात्र पूर्ण रूप से कल्पित अथवा यथार्थ नहीं होते। उपन्यासकार उन्हें कलात्मक रूप से परिपूर्ण कर देता है। जो काल्पनिक नहीं लगते, वे व्यावहारिक होने का आभास देते हैं। पात्रों का चरित्रांकन करने की अनेक विधियाँ हैं ।

1· विश्लेषणात्मक
2· अभिनयात्मक
3· स्वगत कथनात्मक
4· आत्म कथनात्मक
5· संवादात्मक
6· विवरणात्मक
7· संकेतात्मक
8· मनोवैज्ञानिक //5

चरित्र चित्रण

"तमस" उपन्यास में पात्रों का बाहुल्य है। अंग्रेजी शासन और हिंदू-मुसलमान धार्मिक भावना से निर्माण हुए साम्प्रदायिक दंगों के अनुरूप पात्र योजना की गयी है। यह दंगे शहर से गाँव की ओर अग्रेसर होते हैं, इसीकारण शहरी तथा ग्रामीण लोकजीवन का चित्रण इसमें है।

"आंतक" ही तमस का केंद्रिय तत्व है जो सारे कथानक में तथा पात्रों में व्याप्त है। उपन्यास में प्रवृत्तियों और प्रतिक्रियाओं को महत्त्व प्रदान करनेवाले पात्र हैं।

पात्रों को दो वर्ग में विभाजित किया है - शहरी और ग्रामीण पात्र। इसमें अंग्रेजी पात्रों में डिप्टी कमिश्नर "रिचर्ड" उसकी पत्नी "लीजा" कॉंग्रेसी पार्टी के बख्शीजी, चौधरी, खुदाबख्श, हाकिम, करीमखान, शाहनवाज, इत्रफुलेल, चौधरी, जरनैल, मेहता, रामदास, काश्मिरीलाल, अब्दुल गनी, मुस्लीम जाति के मुबारक अली, मौलादाद, एहसान अली, हयातबख्श, खुदाबख्श, हकीम, करीमखान आदि अनेक गौण तथा नगण्य पात्र हैं। आर्य समाज के पात्रों का भी विशेष रूप से चरित्र-

चित्रण किया है। इसमें पुण्यात्मा वानप्रस्थीजी, मंत्रीजी, देवव्रत, बोधराज, लक्ष्मीनारायण लाल, रणवीर आदि पात्र हैं। ग्रामीण पात्रों में सिक्ख-मुसलमान, पात्रों की भरमार है। इसमें हरनामसिंह बन्तो, इकबालसिंह, जसबीर, हरीसिंह, तेजसिंह, प्रीतमसिंह, निहंगसिंह, गोपालसिंह, भगतसिंह, ग्रंथी साहिब, जैसे अनेक पात्र हैं। जिसके कारण पात्रों में वास्तविकता आयी है।

उच्च श्रेणी से लेकर निम्न श्रेणी के पात्र होने के कारण यह कथा अपनी कथा लगती है। इस उपन्यास में इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने मानवता की कामना की है। सभी पात्रों के विचारों से लेखक व्याकुल होते हैं। और धर्मनिरपेक्षता की माँग करते हैं। उन्होंने कहा है, "हमारे देश की इस साम्प्रदायिकता भेद-भाव व्यक्ति के लिए देश के लिए हानीकारक होता है। व्यक्ति का जीवन भयग्रस्त बनता है।

"शहर की हिफाजत का सवाल राजनीतिक सवाल नहीं है, यह राजनीतिक पार्टियों के ऊपर का सवाल है, शहर की सभी लोगों का नागरिकों का सवाल है। इसमें अपनी अपनी पार्टियों को भूल जाना होगा सरकार का भी रोल इसमें बहुत बड़ा है। हम सब को मिलकर शहर की स्थिति को सँभालना चाहिए। हमें इसी वक्त लोगों से अपील करनी चाहिए कि वे आपस में नही लड़े।"[6]

रिचर्ड

इन साम्प्रदायिक दंगों का प्रमुख कारण है अंग्रेज और दंगों का प्रमुख कारण डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड। वह भारतीय इतिहास को पूरी तरह से जानता है। भारतीय लोगों की अबोधता से पूरी तरह परिचित है, इस देश के इतिहास, शिल्प, तथा बौद्ध धर्म से वह प्रभावित है। उसकी पत्नी उसे कहती है, "तुम तो रिचर्ड यों बाते कर रहे हो जैसे यह देश तुम्हारा अपना है।"[7] वह अपनी योजना से हिन्दु-मुस्लिमों में फूट डालने में कामयाब होता है। सबसे पहले फिसाद जाने अन्जाने के रूप में उसने ही करवाया था। सलोत्तरी साहब ने मुराद अली को मिलकर नत्थू चमार से सुअर मरवा दिया और उसे मस्जिद के सामने फेंक दिया। इसकी प्रतिक्रिया

के रूप में मुसलमानों ने गाय को काटा और मंदिर के सामने फेंक दिया अतः इन दंगों की शुरूआत अंग्रेजों द्वारा ही करवायी गयी। शहर का सद्गृहस्थों का एक दल रिचर्ड के पास जाकर इन इंगों को रोक देने की माँग करता है, लेकिन वह इन्कार करता है। इसलिए रिचर्ड प्रमुख पात्र के रूप में प्रस्तुत है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नांकित हैं -

1· रिचर्ड डिप्टी कमिश्नर है, लीजा उसकी पत्नी है। वह यहाँ का अधिकारी होने के नाते भारतीय समाज का अध्ययन करता है। ऐतिहासिक महत्त्व की वस्तुओं का संग्रह वह करता रहता है। वह जिस बंगले में रहता है, वहाँ पर सभी हिंदुस्थानी वस्तुएँ हैं। कोई व्यक्ति या वह खुद बंगले लौटते हैं, तो उन्हें इस बात का एहसास होता है कि हम हिंदुस्थान में लौट आये हैं। भारतीय कला का पारखी था। वह लीजा को बताता है कि "जो लोग मध्य एशिया से सबसे पहले यहाँ आये। नस्ल सब की एक थी। वे आर्य कहलाते थे। ये लोग अपने इतिहास को जानते नहीं हैं, ये केवल उसे जीते भर है।"[8]

प्रस्तुत अवतरण से ज्ञात होता है कि हमारी आम जनता को यह बात मालूम नहीं वे आपस में साम्प्रदायिकता के नाम पर झगडते हैं, लेकिन रिचर्ड यह सब जानता है। उसे भारतीय इतिहास पूरी तरह मालूम है। जो एक कुशल प्रशासन के लिए अपेक्षित है।

2· <u>अंग्रेजों का प्रतिनिधि</u>

रिचर्ड साम्राज्यवादियों का सच्चा एवं इमानदार प्रतिनिधि है। वह उन नीतियों को क्रियान्वित करता है जो लन्दन से निर्णीत होकर आती थी। उन्होंने हिन्दुस्तानी लोगों के स्वभाव का अध्ययन अच्छी तरह से किया है - "सभी हिंदुस्तानी चिड-चिड़े मिजाज के होते हैं, छोटे से उकसाव पर भड़कने वाले धर्म के नाम पर खून करनेवाले, सभी व्यक्तिवादी होते हैं।"[9] वह दृढता से काम लेता है, भावुक नहीं बनता। प्रशासक के लिए सरकारी कारोबार और आपसी कारोबर में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए यह वह अच्छी तरह जानता है। इसीकारण एक काम

को दूसरे काम से अलग रखता है। और एक भावना को दूसरे भावना से अलग रखता है। यही उसके प्रशासन की विशिष्टता है। उसकी पत्नी भी इस विसंगति को समझ नही पाती।

3· रिचर्ड की एक विशेषता है। वह अपनी रूचियों को काम से अलग रखता है। हप्तेभर में वह सिर्फ तीन बार ही कचहरी में जाता है। जिला मॅजिस्ट्रेट के नाते मुकदमे सुनाता है। उन पर न्याय करता है। इंडियन पेनेल कोड को लागू करता है। रिचर्ड की भी कोशिश अंग्रेज सरकार की तरह है कि असंतोष ब्रिटीश सरकार की तरफ न भडके, हिंदू-मुस्लिम में दंगे जारी रहे इसकी कोशिश अंग्रेज करते हैं। इन दोनों के झगड़े तनाव बढ़ रहे है, इसकी खबर डिप्टी कोमिश्नर इन दोनों झगड़ो निपटना नहीं चाहता वह उन्हे समझाता है, "तुम्हारे धर्म के मामले तुम्हारे निजी मामले है, उन्हें तुम्हे खुद सुलझाना चाहिए।"[10]

4· साम्प्रदायिक दंगों का सूत्रधार रिचर्ड ही है, उसे मालूम है, जब जब धर्म के नाम पर ये लोग लड़ते रहेंगे तब तक उनकी भलाई है, उनका प्रशासन सुरक्षित रहेगा। क्योंकि देश के नाम पर भारतीय जनता अंग्रेजों से लड़ती है। जो आपास में लड़ती रहे इसमें अंग्रेज राज की नींव पक्की हो जाएगी इसी कारण ही उन्होंने मुराद अली के द्वारा सुअर कटवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक दिया यह घटना भयानक रूप धारण कर साम्प्रदायिकता की शुरूआत हुई।

रिचर्ड जब चाहता है तो वह इन दंगों को रोक भी सकता है। कुछ नागरिकों का मंडल रिचर्ड के पास मिलने आता है, तो वे उनसे शांति स्थापना के लिए सरकारी सहयोग चाहता है। उसमें कुछ सदस्य कर्फ्यू लगाने की सलाह देते हैं। रिचर्ड अस्वीकार करता है वह गंभीरता को जानते हुए भी अन्जान बना रहता है।

सच्चे इतिहास को जानते हुए भी वह लोगों से सच्चा इतिहास छिपाता है। मंडी में आग लगा दी जाने से भी वह खामोश है। कभी भी देखे तो मानवीय मूल्य शासकीय मूल्यों के सामने हारते हैं।

आखरी बार उसे लोगों की दया आती है, और वह कर्फ्यू लगा देता है। लोगो की जान-माल का पता लगवाने के लिए सेंटर खोल देता है। अमन कमेटी बनवा देता है। जिसमें हिंदू-मुस्लिम-सिक्ख लोगों का समावेश कर देता है। हेल्थ ऑफिसरों को कुओं आदि की सफाई करने का आदेश देता है और लोगों की दुवाएँ लेता है।

वह अमन कमेटी में साम्प्रदायिकता का बीज बो देता है। जिनके परिणाम स्वरूप भारत-पाकिस्तान विभाजन हो ही जाता है।

यहाँ पर बख्शीजी कहते है, फिसाद करनेवाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकनेवाला भी अंग्रेज। भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अंग्रेज।"[11]

इस प्रकार अंग्रेज नीति का प्रतिनिधित्व करनेवाला प्रमुख पात्र है। जो इस साम्प्रदायिक दंगों का प्रमुख सूत्रधार है। लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ उसका चरित्र-चित्रण किया है। वह दाम्पत्य जीवन में असफल है।

2. लीजा

डिप्टी कमिश्नर की पत्नी है लीजा। यह दोनो पती-पत्नी में समानता कम और विरोध अधिक है। रिचर्ड को इतिहास से अधिक रूचि है, लीजा उससे दूर भागती है। उपन्यास में रिचर्ड का प्रशासकीय व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावी बन गया है। लेकिन अपने पारिवारिक जीवन में वह असफल है। "यह मेरा देश नहीं है। नही ये मेरे देश के लोग है।" [12] इस वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि वह केवल अपने कर्तव्य को निभा रहा है। रिचर्ड के विसंगती व्यवहार से लीजा चिढ़ जाती है। रिचर्ड के साथ रहने के कारण अंग्रेजी सरकार की हर एक चाल को वह जान चुकी है। रिचर्ड को मालूम है, उनकी पत्नी लीजा इस देश से उब गयी है, और उसकी अंग्रेजी नीति से भी उब गयी है। लीजा मानवीय मूल्य महत्त्वपूर्ण समझती है, तो रिचर्ड प्रशासन मूल्यों को महत्त्व देता है। रिचर्ड की तटस्थ वृत्ती का वह विरोध करती है।

मंडी में आग लगने से दंगा-फसाद होने से भी रिचर्ड ढोंग करता है, उस पर व्यंग्य करती है - "तुम सो जाओ अभी मुझे बहुत काम करना है। इतने गाँव जल गये रिचर्ड, अभी भी तुम्हे काम है।" अब तुम्हें और क्या काम करना है ?" रिचर्ड ठिठक गया । क्या लीजा व्यंग्य कर रही है।"[13]

इस प्रकार अनेक घटनाएँ हुई हैं, जो रिचर्ड, लीजा के असफल दाम्पत्य जीवन को उद्‌घाटित करती है।

लीजा भारत में आयी थी, तब बहुतसी योजनाएँ बनाकर आयी थी। पहले अपने भारत की संस्कृति साडी पहेनकर घुमेगी, दस्तकारी के नमूने इकट्ठा करना चाहती कुछ तसबीरें उतारना इसतरह अनेक कल्पना थी उसकी, लेकिन यहाँ आकर उसका बंगले का कारावास खत्म न हुआ। अकेलेपन से उब गयी है। उसकी निजी जिंदगी और उसकी समस्याएँ अलग थी। जिनकी बाहरी दुनिया से किसी भी प्रकार संबंध नही था। उसका बाह्य जीवन केवल एक धन्दा था। वह निराश बन गया था। वह कहता भी है - "डैम दिस कन्ट्री उैम दिस लाईफ।"[14] क्योंकि प्रशासन कर्तव्यों को निपटाकर अब वह घर आता तो लीजा नशे में धूल पड़ी रहती और जिस जगह पड़ी रहती वही रहती। यह देखकर वह उलझ जाता और निराश बनता है। पत्नी को जिस सूख की अपेक्षा है वह देने में रिचर्ड असफल बनता है। विभिन्न मानसिक मूल्यों को लेकर लीजा यहाँ उपस्थित हुई है। एक अंग्रेजी डिप्टी कमिश्नर की पत्नी के बावजूद भी पाठकों के मन में लीजा के प्रति सहानुभूति पैदा होती है।

3· **नत्थू**

नत्थू इस उपन्यास का अभागा पात्र है। वह व्यवसाय से चमार है। अंग्रेजों का व्यक्ति मुराद अली नत्थू से झूठ ही कहता है, "हमारी सलोत्तरी साहब को मरा हुआ सूअर चाहिए डॉक्टरी इलाज के लिए।"[15] भोला नत्थू इस काम को बड़ा सहज समझ रहा था। वह इसके पिछे क्या राजनीति है, यह नही जानता

था। इसी कारण वह इस तरह के काम को स्वीकारता है। अपने इस काम की परिणति देखकर वह दुविधाग्रस्त बनता है। उनका अर्न्तद्वंद्व उपन्यासकारों ने प्रभावी रूप में दिखाया हे, जो मार्मिक है। सूअर मार देने का बोध उसके मन को मथता रहता है। आशंका और निराशा से भंरा उसका मन भयानक भयग्रस्त बनता है। वह स्वयं को इस दंगे का मूल समझ बैठता है। लेनिक उसकी पत्नी उसे समझा देती है।

नत्थू चमार है। गाँव में गाय, भैस, घोडा, मरता है तो उसकी खाल निकालने का कार्य भी करता था। इस तरह के काम उसे मुराद अली दिया करता था। ऐसे ही एक दिन मुराद अली उसे सूअर मारने के लिए पाँच रूपये की नोट देता है, इस घटना से लेकर उपन्यास का प्रारंभ होता है। नत्थू को सूअर मारने के लिए बहुत तकलीफ होती है। छः घंटो सूअर के साथ संघर्ष करता है, और उसे मारने में उसे सफलता मिलती है। लेकिन नत्थू बार बार सोचता है, इन्हें मरे हुए सूअर की जरूरत क्यों पड़ी। जिसके कारण भीषण साम्प्रदायिक दंगा हुआ नत्थू इसके लिए स्वयं को अपराधी समझ लेता है। इसी कारण उसका व्यक्तित्व दुविधाग्रस्त बन गया है। बार बार वह पछतावा भी करता है, शराब पिता है। घर में गुमसुम पड़ा रहता है, तो कभी-कभी इधर उधर भटकता रहता है। तो कभी कोठीवाली के पास जाने की भी सोचता है। जिससे उसके मन को कुछ शांति मिल जाये। लेकिन उसका व्यक्तित्व उखड़ा उखड़ा ही बनता जाता है।

भीष्मजी ने प्रत्यक्ष पद्धति से नत्थू का परिचय दिया है। जो मन का द्वंद उद्‌घाटित करता है। नत्थू परेशान था। अपनी कोठरी के बाहर बैठा वह चिलम पर चिलम फुके जा रहा था। वह बहुत दुःखी हुआ है। एक दिन उसे बाज़ार में मुरादअली मिलता है, लेकिन कुछ देर के लिए उसका मन ठिकाने भी आ जाता लेकिन फिर जब वह मारकाट अफवाहों को सुनता है फिर वह परेशान हो उठता है। "आखिर इस काम मैंने क्यों किया" यह प्रश्न उसे बार बार सताता है, इसलिए नत्थू का द्वंद्वग्रस्त जीवन लेखक ने प्रभावी रूप से चित्रित किया है। एक निर्दोष व्यक्ति अपनी उद्‌विग्नता को, यातनाओं को असहाय विवश बनवाकर

12706
A

जी लेता है। इसका चित्रण लेखक ने मार्मिक रूप से किया है।

नत्थू का व्यक्तिचित्र आरंभ से अंत तक भयग्रस्त ही बन गया है। उपन्यास की पहली घटना सूअर मारने की है। सूअर नत्थू के हाथ से मारा गया था। इसी कृत्य के कारण सारा कस्बा बरबाद हो रहा है। लेकिन अपनी इस स्थिति को वह किसीसे भी बताना नहीं चाहता। लेकिन इस साम्प्रदायिक दंगों को देखकर वह यह बात अपनी पत्नी से बताना चाहता है। वह अपनी ईमानदारी स्पष्ट करना चाहता है। वह बार बार अपने मन को समझाता है, मैंने जानबूझकर कुछ नहीं किया है। वह खुद को मुजरेम मानता है। वास्तव में उसने जानबूझकर कुछ नहीं किया है। उसे हमेशा डर लगा रहता है। उसका भयभीत व्यक्तित्व हमेशा प्रत्येक छोटी-छोटी घटना से डरता है। इस बेचैनी से उसका मन घर से भाग जाने की भी सोचता है। तो कभी अल्ला के पास अपने होनेवाले बच्चे के प्रति दुवाँ माँगता है। नत्थू के दिल की अकुलाहट बहुत ही प्रभावी रूप में भीष्मजी ने चित्रित की है। जो उसके निर्दोष व्यक्तित्व का परिचय देती है।

उसकी डर के मारे टाँगे कांपने लगती थी। लेखक ने नत्थू का भावात्मक जो चित्रण किया है, वह मनोवैज्ञानिक बन गया है। उसके मन का संघर्ष, घुटन, अपराध, बोध बहुत ही वास्तविक है। लेखक ने इस पात्र के माध्यम से स्पष्ट किया है कि हमारे हाथ से अन्जाने रूप में एखाद घटना हो जाती है तो सारे राष्ट्र के विनाश के लिए कारण बनती है। इस तरह का एक अपराध अनजाने में नत्थू कर बैठता है। नत्थू से करवायी गयी यह घटना। लेकिन वह इतना भी नहीं कह सकता कि यह मुराद अली का काम है। क्योंकि नत्थू ऐसा बताता तो उस पर कोई विश्वास नहीं करेगा, उसकी ही पिटाई होगी। मुराद अली एक प्रतिष्ठित है उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। इससे उल्टी स्थिति नत्थू की है, वह गरीब और सामान्य आदमी है, वह किसीसे बता भी नहीं सकता।

इस उपन्यास में लेखक ने सामान्य जनता के स्तर पर रहकर हीलेखन किया है। नत्थू के एक किए का फल उसकी सारी जिंदगी की शांति खो देता है।

नत्थू आतंक, भय, संशय से इधर उधर भटकता रहता है, उसे शांति नहीं मिलती और अंत में मारा जाता है उसकी मानसिकता का चित्रण विस्तार से किया है। कमलेश्वर का एक उपन्यास है "लौटे हुए मुसाफिर" यहाँ पर भी आम आदमी की प्रतिक्रियाओं को रेखांकित करने का प्रयत्न हुआ है।

4. **जरनैलसिंह**

"तमस" इस उपन्यास में जरनैल का चरित्र भी महत्त्वपूर्ण बना है। वह कॉंग्रेस का सक्रिय नेता है। वह आदर्श व्यक्ति और स्पष्ट वक्ता है। उसकी उम्र पचास साल के आसपास है। उसका न कोई घर था, तथा न बीवी बच्चे थे। हमेशा फटे-पुराने कपड़े पहनाता था। पैरो में फटी स्लीपर, उपर छः इंच पर खाकी पतलून और उपर खाकी कोट, सिर पर गांधी टोपी पहनता था। शरीर सूखा हुआ था। आवाज उसकी खोखली फुसफुसाती और बारीक थी। घनी माहों के बीच छोटी-छोटी आँखे थी। बगल में हमेशा छोटा बेंत दबाएँ वह घूमता रहता था। जरनेल को भाषण देने की आदत थी। हिंदुस्थान की आज़ादी के स्वप्न लेकर वह जी रहा है।

लेखक ने जरनैल का वर्णनात्मक प्रत्यक्ष पद्धति से बड़ा प्रभावी चित्रण किया है। एक देशभक्त सीधे, सरल, स्वभाववाले व्यक्ति की विडम्बना का कारूण्यपूर्ण चित्रण किया है। जरनैल की उम्र पचास के उपर रही होगी पर बरसों जेल में रहने के कारण उसके शरीर में कुछ नहीं रह गया था। शहर के अन्य कॉंग्रेसियों को कम से कम बी क्लास मिलता था। लेकिन जरनैल हमेशा सी क्लास में डाला जाता रहा। जिससे वह बीमार भी पड़ता रहा और बालू से भरी रोटी भी खाता रहा पर जरनैल ने न तो तोबा की न ही अपनी जरनैली वर्दी को छोडा। जवानी के दिनों में लाहौर कॉंग्रेस के समय वह अपने शहर से लाहौर में बालन्टियर बनकर गया था। उसी दिन से वह बालन्टियर की वर्दी पहनता आया था। दिन अच्छे होते तो वर्दी में कभी सीटी लग जाती, कभी तिरंगे की डोरी बाँध जाती। दिन खस्ता होते तो वर्दी धुल तक नहीं पाती। उसे न कोई काम था। कॉंग्रेस के दप्तर में पन्द्रह रूपए महिना प्रचारक का मेहनताना मिलता था। मन में सनक थी, उसी

के बल पर जिन्दगी के दुःख और क्लेश पार कर जाता था। हप्ते में दो-तीन बार कहीं न कहीं से पीट जाता था। जरनैल अपनी सनक का मारा अपनी छोटीसी झुरियों भरी छाती फैलाये खड़ा रहता था। इस वर्णन से लेखक का पात्र परिचय देने की सूक्ष्म वृत्ति का निरीक्षण का पता मिलता है। "अपनी बात" में भीष्म साहनी ने "मेरा प्रिय पात्र" इस निबंध में जरनैल का जिक्र किया है। और जो व्यक्ति अपने परिवेश में सही नहीं बैठता उनके भाग्य की वही विडंम्बना होती है। जो व्यक्ति अपने परिवेश में सही नहीं बैठता उनके भाग्य की वही विडम्बना होती है जरनैल भी वैसा ही है। और वह लेखक का प्रिय पात्र है। जो सच्चा राष्ट्रभक्त निर्भिड स्पष्ट वक्ता है।

जरनैल काँग्रेस का सक्रिय नेता है। जब प्रभात फेरी निकलती है, तो वह काँग्रेस का झंण्डा लेकर नेतृत्व करता है। काँग्रेस मुस्लीम लीग तथा अंग्रेज लोगों की ढोंगी वृत्ति को वह अच्छी तरह जानता है। और उनका पर्दा-फाश करना चाहता है। वह सनकी वृत्तिवाला है। काँग्रेस पार्टी में काम करने का ढोंग करनेवाला शंकर को कहता है - "तुम गद्दार हो, मैं तुम्हे जानता हूँ। तुम कम्युनिस्ट हो।" अंग्रेज नीति का भी वह विरोध करता है - "तुम बुजदिल हो। यह अंग्रेज की शरारत है, मैं उसका भाण्डा फोड करूँगा।"[16] इन विचारों से उसकी निर्भिकता का परिचय मिलता है। वह शहर में तकरीरे करता फिरता रहता था। मुनादी करने के लिए तांगे में बैठकर चला जाता था। ढोंगी कार्यकर्ताओं के कारनामे सबके सामने स्पष्ट कर देता है। ऐसा करने में वह जरा भी डरता नहीं है। इसी कारण उसकी किसी अन्जान व्यक्ति से हत्या हो जाती है।

देशभक्त

जरनैल अशिक्षित है, वह एक कर्तव्यनिष्ठ राष्ट्रीय सेवक है। अपने देश के प्रति उसे गहरी निष्ठा है। जब जरनैल सूअर की लाश मस्जिद की सीढ़ियों पर देखता है, तो वह सोचता यह अंग्रेजों की शरारत है। इस तरह वह भावुक, संवेदनशील, इमानदार व्यक्ति है। लेकिन सभी लोग उसे पागल समझते थे। उसकी

खिल्ली उड़ाते थे। उसके मन की गहरी वेदना कोई नहीं समझ सकता था। वह कहता है - "मुझे कोई चुप नहीं करा सकता। मैं नेताजी सुभाष बोस की फौज का आदमी हूँ।"[17] मनादी करते हुए कहता है -

"वतन की फिक्र कर ज़्यादा मुसीबत आनेवाली है।
तेरी बरबादियों के तजकरे है आसमानों में।"[18]

इस प्रकार जरनैल सरकार के खिलाफ तकरीरे करता है। देश की खातिर हमेशा जेल में सजा भुगतता है। देश के बड़े बड़े नेता जैसे गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, आदि लोगों के प्रति उनके मन में निष्ठा है। वह गांधीजी का सच्चा सिपाही था। गांधी की विचारधारा से बहुत प्रभावित है। जिस प्रकार गांधीजी कहते है "पाकिस्तान मेरे लाश पर बनेगा" उसी प्रकार जरनैल भी कहता है, "मैं पाकिस्तान नहीं बनने दूँगा" इस वक्तव्य से उनकी देशभक्ति, भावात्मक एकता की प्रवृत्ति प्रकट होती है। हिंदुस्थान के दो टुकडे होकर पाकिस्तान अलग रूप से बने यह उसे कतई पसंद नहीं है।

जरनैल जिस प्रवृत्ति से देशभक्ति के लिए अपना जीवन त्याग देता है, वैसे अन्य नेता नहीं थे। वह अकेला काँग्रेसी के वर्ग चरित्र को ठीक नहीं कर पाता। वह जिस निष्ठा से काम करता है, तो लोग उसे पागल समझते हैं। उसकी खिल्ली उड़ाते हैं। उसे सनकी एवं विक्षिप्त समझते हैं। वह कहता है - "गोरा बंदर हम पर हुक्म चलाता है···हम एक है, हम भाई-भाई हैं, हम मिलकर रहेंगे।"[19]

यह उनकी बाते खत्म होने से पहले ही किसीने उसे "तेरी माँ की" गाली दी और लाठी के एक ही भरपूर वार से उसकी खोपड़ी फोड़ दी। छडी कहाँ गयी, और फटी हुई मूँगीया पगड़ी कहाँ गयी और फटे हुए चप्पल कहाँ गये, जरनैल वही ढ़ेर हो गया। यही थी जरनैल के जीवन की विडम्बना सच्चाई की सजा।

4· बख्शीजी

बख्शीजी जाति के मुसलमान हैं। लेकिन वे बुजुर्ग, तजुर्बेदार, शांत, गंभीर स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। गांधीजी की अहिंसा वृत्ति से प्रभावित हैं। जातिय भेदभाव मिटाने के लिए वे विशेष कार्य करते हैं। वे जिला काँग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी हैं। उनकी देह तो शिथिल है, लेकिन मन उत्साही है। प्रभात फेरी तामिरी कार्य करने के लिए सबसे आगे आते थे। झाडू हाथ में लेकर आँगन बुहारते हैं। नालियाँ, रास्ते साफ करते हैं। इस पात्र से लेखक ने स्पष्ट किया है कि जातीय पार्टी महत्त्वपूर्ण नहीं है, तो महत्त्वपूर्ण है देश की एकता। एकनिष्ठ भावना से बंधुत्वभाव से अगर देश कार्य किया जाय तो बाहय शक्तियों को दहशत मिल सकती है। अंग्रेजों ने शरारत कर सूअर मारवाकर मस्जिद के सीढ़ियों पर फिकवा दिया था, बख्शीजी जानते हैं कि शरारत किसकी हैं वे सूअर की लाश वहाँ से हटा देते हैं, और कहते हैं "लगता है शहर पर चीले उड़ेगी। आसार बहुत बुरे हैं।" और उनका चेहर पहले से भी ज्यादा पीला और गंभीर लगने लगा।[20]

शहर में तनाव बढ़ जाता है तो नागरिकों का एक शिष्ट मंडल रिचर्ड के पास चला जाता है। उसमें बख्शीजी उनका प्रतिनिधित्व करते हुए सरकार को फौरन कारवाई करने की माँग करते हैं। कफर्यू लगाने की सलाह भी देते हैं। लेकिन सरकार तटस्थता का रूख अपना लेती है। भीषण दंगो, फिसादों, मारकाट, लूटमार, आगजनी के बाद सरकार की तरफ से कफर्यू लगाया जाता है। माल नुकसानी की पूछताछ होती है। तभी बख्शीजी कहते हैं कि "फिसाद करनेवाला भी अंग्रेज फिसाद रोकनेवाला भी अंग्रेज, भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज घर में बसानेवाला भी अंग्रेज, अंग्रेज फिर बाजी ले गया।"[21]

5· देवदत्त

देवदत्त साम्यवाद को स्वीकारने वाला साहसी युवक है। वह माँ बाप का लाडला बेटा है। माँ चाहती है कि इस दंगों, फिसादों में वह घर पर ही बैठे। कही बाहर नहीं चला जाए। लेकिन वह मानता है, उसके पिता की प्रतिक्रिया

है कि "सभी गालियाँ देते हैं न काम न धाम, दो-दो पैसे के मजदूरों कुलियों को इकट्ठा करता फिरता है, उन्हें लेक्चर झाडता फिरता हे, हरामी मुँह पर दाढी नहीं उतरी लीडर बन गया है सूअर का बच्चा..."[22]

इससे पता चलता है कि वह कामरेड पार्टी का कार्यकर्ता है। गरीबों के प्रति उसके मन में प्रेम है। उसके दिमाग में डायरी थी। वह हाथ मलता नाक सहलाता डायरी में एक के बाद एक काम करता रहता था।

शहर में जो तनाव है उसे शांत करने की कोशिश वह करता है। उसे मुँह और नाक सहलाने की आदत है। और जब वह अपनी कार्य सूची करना चाहता है तो अपने दोनों हाथ मलने की उसे आदत थी। शहर में अमन रखने के लिए वह काँग्रेस और मुस्लिम लीग के लीडरों को इकट्ठा करना चाहता है। किसी ने उसे देखकर दरवाजा बंद किया था, कोई तुनककर बोला था, कम्युनिस्टों को बुरा-भला कहा था।

वह मध्यवर्गीय लोगों का उनके पुराने संस्कारों का जिक्र करता है। परस्पर भेदभाव मिटाकर समाज विकास की कामना करता है। उसकी राय है कि उच्च तथा मध्यवर्गीय लोग ही धर्म के नाम पर लड़ते लेकिन मजदूर नहीं लड़ते लेकिन खबर मिलती है - "धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं।"[23] साम्प्रदायिकता का विषैला वातावरण और उसकी भीषणता का उसे पूरा ज्ञान है, यह बात स्पष्ट होती है। अंत में अमन हो जाने के बाद वह आँकडा बाबू से पूछता है "गरीब कितने मरे और खाते-पीते लोग कितने मरे। इसकी बातों से स्पष्ट है कि वह चाहता है दंगों की स्थिति में गरिबों का ही बहुत नुकसान होता है वे ही ज़्यादा मारे जाते हैं।

रणवीर

रणवीर हिंदू युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। उम्र उसकी छोटी है। आँखों में कौतुहल और सरल विश्वास है। वह उत्साही दृढ संकल्पी है। अपने बचपन में उसने अनेक शूर वीरों की कहानियाँ सुनी थी। "वह कद का छोटा

था इसलिए वह मन ही मन शिवाजी की भूमिका में अपने को देखा करता था। वह "शस्त्रगार" में उपर नीचे टहलता वैसे ही जैसे औरंगजेब के साथ लोहा लेने से पहले शिवाजी टहलते रहे होंगे।"[24] रणवीर के इस वर्णन में उसकी प्रभावी वीरत्वभरी आकांक्षा प्रभावी चित्रण किया है।

रणवीर को उसके मास्टरजी शत्रू पर हल्ला किस तरह किया जाये ? इसकी जानकारी उसे देते हैं। काठी चलाना, छुरा चलाना की परीक्षा ली थी। मुर्गी काटने की परीक्षा भी ली थी। उसने यह बड़ा कठिन काम आसानी से किया और गुरू की शाबासकी पायी थी।

गुरू की दीक्षा और शिक्षा के कारण रणवीर दृढ संकल्पी बना था। उसके मन की कमजोरी नष्ट हुई थी। इंद्र ने इत्रफरोश की बड़ी दयनीय हत्या की जो गरीब आदमी था जैसे उस मुर्गी की तरह ही निरपराध था। रणवीर की चेतना से ही इंद्र ने उसे मार दिया। रणवीर का चरित्र हिंदु युवाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाला है।

अन्य पात्र

अन्य पात्रों की बहुलता इसमें हैं। वे आम जनता का चित्रण करने के लिए विशेष सहायक बने हुए हैं। नत्थू उसकी पत्नी, फकीर, कालू, तेली, खानसामा, चपरासी, हर्बट, गाडीवान, बाबू खुदाबख्श, हकिमसिंह की पत्नी, गोरखा चौकीदार, नानाबाई भूसा, खिजर, करीमखान, पीरसाहब, नानकु, लाला लक्ष्मीनारायण, की पत्नी, बेटी विद्या, फतह दीन, रघुनाथ की पत्नी उनका नौकर मिलखी इत्रफरोश आदि आम जनता के पात्र हैं। विभाजन के नाम पर जो क्रूर अत्याचार हुए, गरीबों की जो शोकान्त कथा घटी, उसका प्रभावी चित्रण करने के लिए हर पात्र अपना-अपना योगदान देने के लिए सफल बना है। भीष्मजी ने जनवादी लेखक के रूप में सामाजिक यथार्थ को चित्रित किया है। इनमें साधारण जनता की दयनीय स्थिति का चित्रण बहुत ही कारूण्यजनक बन गया है।

निष्कर्ष

"तमस" में पात्रों का बाहुल्य है। लेकिन प्रत्येक पात्र अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। "तमस" यह उपन्यास पाँच दिनों में घटे साम्प्रदायक दंगों को लेकर लिखा गया है। इसमें शहरी, ग्रामीण, अमीर, गरीब, अधन, उदात्तता, काल्पनिक, यथार्थ आदि प्रकार के पात्र हैं। ऐसे पात्र आज भी समाज में विद्यमान हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखक हमारी कमियों की ओर संकेत कर उन्हें दूर कर देने की माँग करता है। और हमारा ही समाज मानव धर्म से मुक्त होने की अभिलाषा करता है। जिनमें एकता हो अपनत्व एवं बंधुभाव हो यह स्पष्ट कर देता है।

आज़ादी के पूर्व अंग्रेज-नीति ने जो फूट नीति अपनायी थी उसका चित्रण रिचर्ड नामक अंग्रेजी अफसर के माध्यम से स्पष्ट किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक मूल्य मानवीय मूल्यों से महत्त्वपूर्ण समझे जाते थे। इस उपन्यास का दूसरा पात्र नत्थू इस साम्प्रदायिक दंगों का अस्त्र बनवाया गया था। लेकिन उसकी विडंम्बना यह है कि उसे इस बात का कुछ पता भी नहीं था, जब उसे यह बात मालूम होती है तो वह दुविधग्रस्त बनता है। वह बेचैन हो उठता उसका भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण बहुत ही सुंदर बन पड़ा है।

एक देशभक्त एवं निष्ठावान पुरूष के रूप में जरनैल का चित्रण हरनामसिंह का निष्पाप व्यक्तित्व राजों को मानवीयता, मुराद अली की मक्कारी एवं देशद्रोही वृत्ति लीजा का अकेलापन, बख्शीजी मुसलमान होते हुए भी उनकी अंग्रेज के प्रति निष्ठा, आर्य समाजी दृष्टिवाले वानप्रस्थीजी, देवव्रत, रणवीर, बोधराज, आदिपात्र हैं। मुसलमान एवं सिख लोगों का भी प्रसंगानुकूल सुंदर चित्रण इसमें हुआ है।

इस उपन्यास में भीष्मजी साहनी ने पात्रों की सजीवता स्पष्ट की है। पात्रों में बौद्धिक, भावुक और हताश आदतों का संमिश्रण है। भीष्मजी ने "तमस" के लिए जो पात्र चुने हैं, वे जाति वर्ग, धर्म, राजनीति का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र है। उनके सामान्य और सूक्ष्म विशेषताओं का परिचय दिया है। जो भीष्मजी के जीवन अनुभव के व्यापक परिवेश का परिचय देते हैं। समाज से जुड़े यह पात्र विकृत, असमर्थ, असामाजिक समस्याओं को प्रकट करते हैं। जिससे जीवन की सरलता

4. संवादों में उद्देश्यपूर्णता भी होनी चाहिए।

5. उपन्यासकार जिस बात को कहना चाहता है उसमें कथा और पात्रों का किसी न किसी प्रकार का प्रत्यक्ष पारस्परिक संबंध अवश्य होना चाहिए।

6. मन का सूक्ष्म विश्लेषण इसमें होता है।

7. भावात्मक चेष्टाएँ एवं अकुलता के चिन्ह ही हृदय की बात को कह देने में समर्थ होते हैं।"[25]

ये आदि संवादों की रचना किस प्रकार की हो यह प्रतापनारायण टंण्डन ने स्पष्ट की है।

"तमस" उपन्यास में इन बातों का चित्रण मिलता है। जो संवाद तत्व के लिए उपयुक्त है।

"तमस" में साम्प्रदायिक दंगों का वर्णनात्मक चित्रण है। इसमें कथोपकयन को कम स्थान मिला है। इसमें घटनाएँ प्रमुख हैं। इसमें जो संवाद हैं, वही नाटकीय प्रभावी एवं भावों का उद्‌घाटन करनेवाले हैं।

लीजा रिचर्ड से कहती है "एक ही नस्ल के कैसे हो सकते हैं, रिचर्ड जबकि तुम कहते हो कि इस रास्ते से तरह-तरह के लोग आते रहे हैं।"

रिचर्ड लीजा से समझाता है -

"नहीं, नहीं लीजा यही बात तो लोग भूल जाते हैं।" रिचर्ड की आवाज में उत्तेजना आ गयी थी, वह अपनी खोज को प्रमाणित कर रहा था। "जो लोग मध्य एशिया से सबसे पहले यहाँ आये, शताब्दियों के बाद उन्हीं के नाती पोते अन्य देशों से इधर आये। नस्ल सबकी एक ही थी। वे लोग जो आर्य कहलाते थे और हजारो वर्ष पहले यहाँ पर आये और वे भी जो मुसलमान कहलाते थे और लगभग एक हजार वर्ष पहले यहाँ पर आये एक नस्ल के लोग थे। सभी एक ही मूल जाति के लोग थे।"

और जटिलता स्पष्ट करने में भीष्मजी सफल हुए हैं।

भीष्मजी ने पात्रों का परिचय अनेक वर्गों के द्वारा किया है। जिनमें शहरी, ग्रामीण, धार्मिक, पुरूष तथा स्त्री पात्र मानवीय और अमानवीय गुणों से युक्त है, जो कथानुकूल स्वाभाविक सप्राण यथार्थ द्वंद्वात्मक, रोचक परिपूर्ण गुणों से ओत-प्रोत है। अभिनयात्मक विधियों के द्वारा अंकन किया है। जो पाठक के हृदय को प्रभावित कर सोच-विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके सुख से सुखी दुःख से दुःखी बना देते हैं।

"तमस" में भीष्मजी धर्म का ढोंग, पाखंण्ड स्पष्ट कर धर्म की उदात्तता, सच्चाई, गंभीरता स्पष्ट करने में सफल हुए हैं। भीष्मजी की सूक्ष्मता निर्माण कौशल्य की सशक्तता स्पष्ट होती है।

3. पात्रों के कथोपकथन

पात्रों का कथानक मानव जीवन की घटनाओं पर आधारित होता है। उपन्यासकार चरित्र उद्‌घाटन करने के लिए संवाद योजना का कलात्मक प्रयोग करता है। दो या दो से अधिक पात्रों से वार्तालाप चाहता है, उसे कथोपकथन कहा जाता है। उसपन्यास में पात्रों की भाषा वास्तविक जीवन का स्पष्टीकरण करती है।

उपन्यास में संवाद लिखते वक्त लेखक को कुछ बातें ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

1. उपयुक्तता का होना आवश्यक है, उपन्यास में संवाद उपन्यास के वातावरण को उपयुक्त बना देता है।

2. संवादों में वास्तविकता का होना आवश्यक है। वास्तविकता तभी आती है, जब कथानक का विषय कृत्रिम या कल्पना द्वारा गढ़ा हुआ न हो।

3. कथानक में संवाद लम्बे और संक्षिप्त हो तो कथोपकथन उब पैदा करनेवाला होता है।

"इन बातों को ये लोग भी तो जानते होंगे।" "यहाँ के लोग कुछ नहीं जानते। ये येही कुछ जानते हैं जो हम इन्हें बताते हैं।" फिर थोडी देर तक मौन रहकर बोला, "ये लोग अपने इतिहास को जानते नहीं है, ये केवल उसे जीते भर हैं।"

मैं तो अभी तक हिंदू और मुसलमान को अलग अलग से पहचान भी नहीं सकती। तुम पहचान लेते हो रिचर्ड । कि आदमी हिंदू है या मुसलमान?"

" हाँ मैं पहचान लेता हूँ।"

"घर का खानसामा क्या हिन्दू है, या मुसलमान ?"

"मुसलमान है।"

"तुम कैसे जानते हो ?"

"उनके नाम से फिर उसकी छोटी सी दाढ़ी से पहनावे से भी, फिर वह नमाज पढ़ताहै, यहाँ एक कि उसके खान-पान के तरीके भी अलग है। मुसलमानों के नामों के अन्त में अली, दिनू, अहमद ऐसे शब्द लगे रहते हैं जबकि हिन्दुओं में नही।

वर्तमान घटनाओं की समीक्षा तथा उनका महत्त्व इन संवादों द्वारा ही प्रकट हुआ है। पात्रों की मानसिक स्थितियों का परिचय कथोपकथन से ही मिलता है। भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में रोचक संवादों की रचना की है।"[26]

इसमें प्रसंगानुरूप संक्षिप्त एवं दीर्घ संवादों की योजना की है। इस में जटिलता एवं क्लिष्टता नहीं है। इसमें न व्यर्थ विस्तार है न संकुचितता मिलती है।

संवादों की योजना लेखक इसप्रकार करता है कि जिससे दृश्य एवं कथा को सजीवता प्राप्त हो। भीष्म साहनी ने इस प्रकार के संवादों द्वारा कथा का पर्याप्त विकास किया है। भूत, भविष्य और वर्तमान की घटनाओं के माध्यम से संवादों की महत्ता प्रकट होती है। रिचर्ड, लीजा के संवादों द्वारा लेखक ने भारत की स्थिति, धार्मिकता एवं संस्कृति का परिचय दिया है।

"क्या आज-कल वहाँ मेला लगा है ?

"हाँ, लगा है, पर इन दिनों जाना ठीक नहीं।"

क्यों ?

"इन दिनों हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनाव पाया जाता है। दंगा फसाद का डर है।"

लीजा ने हिंदुओं और मुसलमानों की स्थिति के बारे में सुन रखा था। लेकिन वह इनके बारे में जानती बहुत कम थी।

रिचर्ड लीजा की ओर घूमकर बोला, "क्या यहाँ के लोगों को तुमने ध्यान से देखा है ? एक नस्ल के लोग हैं। नाक-नक्श सबके एक जैसे हैं। एक तरह के नाक, होंठ, चौडा, ऊँचा माथा, ब्राउन रंग की आँखे यहाँ के लोगों की आँखे ब्राउन रंग की हैं - तुमने ध्यान दिया, लीजा ?" [27]

चरित्र विश्लेषण करनेवाले संवाद

भीष्मजी ने संवादों द्वारा पात्रों का चरित्रांकन बड़ी कलात्मकता के साथ किया है। पात्रों के विचार रहन, सहन उनकी चारित्रिक विशेषताएँ, भावुकता, कर्तव्यनिष्ठा, सहृदयता, मानवीयता, अमानवीयता, निष्ठुरता, घृणा, द्वेष, आन्तरिक तथा बाह्य चरित्र का प्रभावी उद्‌घाटन भीष्मजी ने संवादों के माध्यम से किया है। हरनामसिंह अपनी पत्नी के साथ एक मुसलमान के घर में पनाह लेता है जिनके द्वारा लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि इस साम्प्रदायिकता की आग में मानवता पूरी तरह नष्ट नहीं हो गयी है तो वह जिन्दा भी है।

"भला हो तुम्हारा बहन, तुम्हारा किया हम कभी नहीं उतार सकेंगे।" रब्ब घरों बेघर किसी औं न करे। रब्ब दी मेहर कोई तौं सब ठीक हो जायेगा। §भगवान किसी को घर से बेघर न करे अल्लाह की कृपा बनी रही तो सब ठीक हो जायेगा।§"

औरत अभी भी लस्सी का कटोरा हाथ में पकड़े बन्तो के सामने खड़ी थी। लस्सी के कटोरे की ओर देखकर बन्तो असंमजस में पड़ गयी। बन्तो ने आँखे

उठाकर पति की ओर देखा उसक पति उसी की ओर देख रहा था। मुसलमान के हाथ से कटोरा कैसे ले ले ? उधर रात भर की थकान, हलक सूख रहा था। उनकी झिझक को घर की औरत समझ गयी।"

"तुम्हारे पास कोई बर्तन हो तो उसमें डाल लो, इधर गाँव में पैण्डित की दुकान है। अगर वह घर पर हुआ तो मैं उससे तम्हारे लिए दो बर्तन ले आऊँगी पर क्या मालूम वह मिलता है या नहीं। हमारे हाथ का नहीं लो, पर दिन-भर भूखें कहाँ पडे रहोगे ?" इस पर हरनामसिंह ने हाथ बढ़ाकर कटोरा ले लिया।

"तेरे हाथ का दिया अमृत बराबर है बहन, तुम्हारा किया अभी नहीं उतार सकते।" [28]

घर के मर्द हिन्दुओं पर बलवा करने गये हैं। वे हिन्दुओं की हत्या करते हैं, उनका माल लूट लेते हैं, उन्हें आग लगा देते हैं, तो उनकी ही घरवाली दो असहाय हिन्दुओं को सहारा देती है। इसमें मानवीयता की झलक ही मिलती है।

बन्तो की बहू भी उसे बार-बार कह रही थी "काफरों की पनाह देने ओ। बहु माड़ा करने ओ। मड़द तुदाँ पुछसन। §काफरों को पनाह दी है, बहुत बुरा किया है। मर्द आकर तुमसे पूछेंगे।§ पर उसकी सास विचलित नहीं हुई।

"तुम चुप कर। बदनसीब कोई आये तो मैं धक्का दे के बार कड़ढ देवाँ?" §तु चुप रहा। कोई बदनसीब आये मैं उसे धक्का देकर बाहर निकाल दूँ।" [29]

उसकी बहू डर रही थी, इन लोगों को बन्तो ने पहचाना था, वे सिर्फ सहारा ढूँढ रहे थे और कुछ नहीं। वे अपनी जान को बचाना चाहते हैं। उन्हें सुरक्षितता मिलती है, बन्तो और उनमें जो मानवीयता थी, इस प्रकार उन्हें वह आसरा देती है।

वातावरण की सृष्टि करनेवाले संवाद

उपन्यासकार घटनाओं में वास्तविकता लाने के लिए कथोपकथन से सजीव वातावरण की निर्मिति करता है। "तमस" में तो प्रारंभ से अंत तक आतंक, भयावह, वातावरण है, जो साम्प्रदायिकता की भीषणता का चित्रण करता है। हिन्दु-मुसलमानों

का परस्पर राग, देष, घृणा से भरा संघर्षयुक्त जो संबंध है, वह बहुत ही दर्दनाक है। साम्प्रदायिकता के कारण वातावरण में बहुत उग्रता आ गयी थी। सड़कों की सड़के सूनी पडी थी। न कोई दुकान खूली थी न कही टांगा - मोटार चल रही थी। अगर किसी दुकान के किवाड खुले हो तो समझ लो लूट गयी है। अगर लाठियाँ लिए कुछ लोग खड़े हो तो समझ लो उन्हीं के संप्रदाय के लोगों का वह मुहल्ला है और जहाँ वे खड़े हैं वहाँ से दूसरे संप्रदाय के लोगों का मुहल्ला शुरू हो जाता है। पर सभी मुहल्ले यों बँटे हुए नहीं थे। सड़के किनारे-किनारे के पक्के दो मंजिला मकान हिंदुओं के पीछे गलियों में कच्चे मकान मुसलमानों के या देवदत्त की शब्दावली के सड़कों पर खुलनेवाले मकान मध्यवर्ग के तो गलियों में खुलनेवाले मकान निम्न वर्ग में।

"देवदत्त!" चौक के बाये हाथ से किसी ने आवाज लगायी। सायकल पर बैठे-बैठे जमीन पर पैर रखकर देवदत्त रूक गया।

"आगे मत जाओ, एक आदमी मरा पड़ा है।" हाथ में लाठी उठाये, ठिगने कद का एक आदमी सडक पर आ गया।

"कहँ पर ?"

"चौक के पार, ढलान पर।"

"कौन है ?"

"मुसलमान है, और कौन है ?"

"तुम इस वक्त कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं अपने काम से पार्टी आफिस जा रहा हूँ।"

"एक हिन्दु उस तरफ कब्रिस्तान में मरा पड़ा है।" कहते हुए ठिगने कद के आदमी ने कहा

"तुम मुसलमानों के हम में बोलते थे। अब उनसे जाकर कहो, "हमारी लाश दे जाये, अपनी उठा ले जाये"....

उनसे जाकर कह दो हमारा एक मरेगा, हम उनके तीन मारेंगे।"-30

मनोवैज्ञानिक संवाद

"तमस" में भावात्मक संवादों की योजना की है। जो कि मनोवैज्ञानिक बन गये हैं। अपराध, पश्चाताप, चिंता, आशा, आत्मसमर्पण या बलिदान से युक्त संवाद हैं। जिनमें परेशानी ही ज़्यादा है। नत्थू और उसकी पत्नी के वार्तालाप भी ऐसे ही हैं -

नत्थू अभी भी चूप बैठा था ।

"तुम बोलते क्यों नहीं ? तुम इतनी देर बाहर रहे, मैं मछली की तरह तड़पती रही हूँ।"

नत्थू ने अपनी आँख उठाकर अपनी पत्नी की ओर देखा एक बाढ़ सी उसके दिल में उठी। सहसा उसने सिर झटक दिया भाड़ में जाय मुराद अली और उसका सूअर उसने मन ही मन कहा। हम तो घर लौट आये हैं ।

"बाड़ेवाले मेरे बारे में पूछते थे ?"

"हाँ पूछते थे एकाध बार पूछा था।"

"तुमने क्या कहा ?"

"मैंने कहा काम पर गये हैं। आते ही होंगे।"

"क्या बार-बार पूछते थे ?"

नहीं जी, लोग काम पर जाते नहीं हैं। शाम के साथवाली ने पूछा तो मैंने कहा घोडे की खाल उतारने गये हैं।"

एक हल्कीसी मुस्कराहट नत्थू के होठों पर दौड गयी ।

"मगर तुम कहा गये थे ?"

"फिर बताऊँगा।।

कोई घुमिल अस्पष्ट-सी अकुलाहट थी जो नत्थू के दिल को अभी भी मथ रही थी। इस धुकधुकी के कारण वहाँ सड़कों पर चक्कर लगाता रहा था, इसी कारण उसने शराब पी थी।

ऐसे संवादों में मन की अस्वस्थता का अन्तर्मन का परिचय मिलता है। नत्थू ऐसा पात्र है, जो सारे उपन्यास में दिधा, चिंता, भय से पीड़ित है। उसके अन्जाने में उसके हाथों जो सूअर की हत्या करवाई गयी, वही उस विनाशलीला का कारण बनी। उसका अपराध बोध उपन्यास में बहुत ही प्रभावी बन गया है।

वास्तविक रूप में "तमस" उपन्यास में भीष्म साहनी ने अंग्रेज नीति साम्प्रदायिकता, घृणा, धर्माडम्बर, झूठा अभिमान आदि पर व्यंग्य किया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है।। साम्प्रदायिक आग भड़कानेवाले अंग्रेज ही थे। जिन्हें मुराद अली जैसे देशद्रोही शामिल थे।

मुसलमान आदमी बोल रहा था "कौंग्रेस" हिंदुओं की जमात है उसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नहीं है।

इसका जवाब बड़ी उम्र के आदमी ने दिया - "कौंग्रेस सबकी जमात है हिंदुओं की सिक्खों की मुसलमानों की ।"

यह सब हिंदुओं की चालाकी है बख्शीजी हम सब जानते हैं। आप चाहे जो कहे कौंग्रेस हिन्दुओं की जमात है। और मुस्लिम लीग मुसलमानों की। कौंग्रेस मुसलमानों की रहनुमाई नहीं कर सकती।"

इन संवादों से यह पता चलता है कि हमारी यही विडम्बना है कि हम में एकता की कमी है। लीजा और रिचर्ड की बातचीत से चह पता चलता है कि अंग्रेज अफसर और उनकी नीति किस प्रकार थी।

"धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं, देश के नामपर हमारे साथ लड़ते हैं।" "बहुत चालाक नहीं बनो रिचर्ड। मैं जानती हूँ, देश के नामपर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नामपर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो।"

डार्लिंग हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन-सी समानता पायी जाती है। उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक दूसरे से अलग हैं।"

रिचर्ड के माध्यम से इंडियन सिविल सर्विस के अफसरों का सिर्फ यही काम था, उनका मतलब एक कौम को दूसरे से अलग रखना, एक भावना को दूसरे से अलग रखना यही उसके स्वभाव की विशिष्टता थी। उनकी सर्विस ही उन्हें तटस्थ बना देती है। "सिविल सर्विस हमें तटस्थ बना देती है। हम यदि हर घटना के प्रति भावुक होने लगे तो प्रशासन एक दिन भी नहीं चल पाएगी।"

लीजा पूछती है,"यदि 103 गाँव जल जाये तो भी नहीं ?" रिचर्ड जवाब देता है "तो भी नहीं।"-[31]

वह रिचर्ड से कहती आज चल रहा है जो भारतीय साम्प्रदायिकता का कारण तुम्हारी सरकार ही है। उसके दिल में भारत के प्रति भावुकता है, यह स्पष्ट किया है।

बख्शीजी की प्रतिक्रिया भी बहुत ही मार्मिक है - "फिसाद करनेवाला भी अंग्रेज, रोकनेवाला भी अंग्रेज, भुखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अंग्रेज····अंग्रेज फिर बाजी ले गया ।"-[32]

उपन्यास का एक मजदूर पात्र सही कहता है, "आये आजादी, पर हमें क्या ? हम पहले भी बोझा ढ़ोते हैं, आज़ादी के बाद भी बोझा ढोयेंगे।"-[33]

निष्कर्ष

"तमस" घटना प्रधान उपन्यास होने के साथ उसमें पात्रों की भरमार है। सामाजिक यथार्थ का स्पष्टीकरण करने के लिए लेखक ने पात्रों की बातचीत भी वास्तविक रूप में स्पष्ट की है। जो विचारों की सजीवता का परिचय देने में सक्षम हुआ है। इसमें भावाभिव्यक्ति की सरलता, सामाजिक संकीर्णता, युगबोध की यथार्थता है। भीष्मजी ने उसे उपदेश तथा राजनीतिज्ञ के रूप में अभिव्यक्त नहीं किया है। समाज की विडम्बना एवं कमियों को दूर करने का प्रयास किया है।

भीष्मजी का अनुभव, ज्ञान और संस्कार इन वार्तालापों में परिलक्षित होते हैं। उनके विचारों का गांभीर्य स्पष्ट होता है। लेखक ने प्रत्येक बड़ी या छोटी

घटना का संकेतात्मक और विस्तारपूर्ण विवरण दिया है। जो संवादों के कारण ही प्रभावी बना है और स्वाभाविक तथा यथार्थ बन गया है।

"तमस" के संवाद वर्णित घटनाओं और दृश्यों का सजीव चित्रण करने के लिए प्रभावी बने हैं। कथानक का विस्तृत और सजीव चित्रण कथोपकथन से हुआ है। जिससे कथानक में विविधता, स्वाभाविकता और रोचकता उत्पन्न होकर कथा का पर्याप्त विकास हुआ है।

"तमस" के संवाद वर्णित घटनाओं और दृश्यों का सजीव चित्रण करने के लिए प्रभावी बने हैं। कथानक का विस्तृत और सजीव चित्रण कथोपकथन से हुआ है। जिससे कथानक में विविधता, स्वाभाविकता और रोचकता उत्पन्न होकर कथा का पर्याप्त विकास हुआ है। "तमस" उपन्यास के संवाद पात्रों का चरित्र स्पष्ट करने के लिए भी सफल हुए हैं। पात्रों का रहन -सहन, विचार, अर्न्तव्दंव्द क्रिया, प्रतिक्रिया, भाव आदि का व्याख्यात्मक प्रयास "तमस" के संवाद करते हैं। व्यावहारिक संघर्ष का कुशलता के साथ मनोवैज्ञानिक चित्रण इन संवादों की खास विशेषता है। जिनके माध्यम से लेखक ने अपने मंतव्य का प्रकटीकरण किया है। साम्प्रदायिकता की संकीर्ण भावना, राजनीति की कुटिलता पार्टी के लोगों की स्वार्थान्धता स्पष्ट कर सर्व धर्म सम भाव का मानवता के धरातल पर स्पष्टीकरण भीष्मजी ने किया है।

"तमस" के संवाद अनेक गुणों से युक्त है। उपयुक्त, मार्मिक, रोचक, स्वाभाविक, सुबोध, गतिशील और संक्षिप्त संवादों की योजना भीष्मजी की प्रतिभा यह स्पष्ट कर समाज के लिए उपयुक्त बने हैं। संवादों के दृष्टि से उपन्यास उचित एवं उच्च कोठी का बन गया है।

बसंती

प्रस्तावना

बसन्ती उपन्यास का कथ्य उन निम्नवर्ग के लोगों का जीवन है, जो महानगर दिल्ली में रोजगार की तलाश में निरन्तर उजड़ता-बसता है। इसमें भीष्म साहनी ने पूँजीवादी और सामन्ती व्यवस्था की दोहरी शिकार निम्नवर्ग की उपेक्षित और शोषित नारी बसन्ती के विद्रोह का चित्रण किया है, जो प्रचलित व्यवस्था के ढाँचे को तोड़ने का संघर्ष करती है, स्वतंत्र मार्ग खोजने का प्रयास करती है।

इस उपन्यास में सामाजिक यथार्थ का चित्र बड़ी ही गहराई से वर्णित किया है। इस उपन्यास में निम्नवर्ग, मजूर वर्ग के लोगों का जीवन है। निरन्तर टूटन, संघर्ष, उजाड़ती हुई बस्ती, तनावों के साथ संघर्ष करते हुए जानवरों से भी बेहत्तर जीवन जीने वाले लोंग। उन्होंने इस उपन्यास की रचना आज़ादी के बाद की है। आज़ादी मिलने के बाद भी सामान्य लोगों का टूटता हुआँ जीवन दिखाया है।

जब उनकी बस्ती उजाड़ दी जाती है, तब उनके पास इतना भी वक्त नहीं मिलता कि अपना सब सामान उठा ले, सरकारी लोंग जबरदस्ती उन्हें हटा देते हैं। कभी-कभी उनका खाने-पीने का सामान रहता तो कभी बच्चे भी रहते हैं। इसी तरह की उनकी जीवन गाथा भीष्मजी ने हमारे सामने रखी है।

बसन्ती

लेखक ने इस उपन्यास में बस्ती में रहनेवाली एक गरीब लड़की का चित्रण किया है। जिसका नाम है, "बसंन्ती"। जिसे अपने कमाई पर नाज है, वह खुद कमाती है, बसन्ती किसी पर बोझ बनकर नहीं जीती, वह दूसरों को भी पालेगी इतनी हिम्मत सोला साल की लड़की में है। औरतों को या मर्द को चुनौती देनेवाला पात्र है। वह पूँजीवादी मूल्यों और संस्कारों पर साहस के साथ प्रहार करती है।

"बसन्ती" इस उपन्यास की नायिका है। वह उपेक्षाओं, अभावों, संघर्षों के साथ लड़कर जीनेवाली नारी पात्र है।

भीष्मजी ने बसंती का चरित्र सामने रखकर एक नयी नारी के व्यक्तित्व को रेखांकित किया है। इस उपन्यास में शुरू से लेकर अंत तक विद्रोह है। वह बस्ती में स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करती है। साधारण लोगों की आकांक्षा थी, हम आज़ादी के बाद स्वतंत्र जीवन जीयेंगे। लेकिन ऐसा होता। आज भी वही हाल है जो ब्रिटीशों के राज्य में था। इसे लेकर ही लेखक ने "बसंती" का उदाहरण लेकर इस तरह के लाखों बालिका आज़ाद भारत में स्वतंत्र जीवन जीने की इच्छा आकांक्षा लिये हुए हैं।

उपन्यास में दिनू, बुलाकी, बसंती यह लोग बस्ती में रहनेवाले हैं। उनकी बस्ती बार बार टूटती है फिर स्थापित होती है। इससे लेखक ने यहाँ स्पष्ट किया है। आज़ादी इन लोगों को नहीं मिली, पूँजीपतियों को मिली है।

शहरी जीवन के परिणामस्वरूप बसंती का चरित्र अलग है। उसका व्यक्तित्व विद्रोही है। उनके व्यक्तित्व में स्वच्छंन्दता, अल्हड़पन, हँस्य, व्यंग्य, गरीबी, उपेक्षा यह सभी मूल्ये बसंती के चरित्र की रचना करते हैं। बसंती साहसी नारी है। वह समाज और व्यवस्था के साथ संघर्ष करते हुए जीनेवाली नयी नारी के रूप में हमारे सामने आती है। निम्न वर्ग के लोगों की दो वक्त न मिलनेवाली रोटी के लिए संघर्ष और अमीरों की अमानुषिकता यहाँ स्पष्ट की है।

बस्तियाँ बार बार टूट जाने पर भी जिजीविषा और साहस का परिचय देते हैं। सरकारी लोग और पूँजीपतियों को बस्तियाँ उज़ाड देने से प्रसन्नता मिलती है। मजदूर लोग फिर बस्तियाँ बसाते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष भी करते हैं। इस उपन्यास में निम्नवर्ग के लोगों पर शहरी जीवन की सुख-सुविधाओं का प्रभाव पड़ रहा है। बस्ती में रहनेवाली लड़कियाँ शहरी लड़कियों जैसी बिंदी, लिपस्टीक लगाती हैं, टेलिव्हिजन देखने के लिए किसी घर की खिड़की से झाँक-झाँक कर देखती है। इस बस्ती के नयी पीढ़ी को दिल्ली की हवा लगने लगी थी।

इस उपन्यास की नायिका "बसंती" के पिता परिस्थितिवश बूढ़े बुलाकी के साथ उसकी शादी करते हैं। लेकिन बसंती पर फिल्मों का असर होने के कारण वह दिनू के साथ भागकर शादी करती है।

आर्थिक मजबूरियों के कारण वैज्ञानिक चेतना से शून्य मजूरों को समझाते हुए इसका विरोध करती है, रोज बीस रूपए कमानेवाली बसंती से उसे उत्तर मिलता है -

"बनाई थी तो बनाई थी···सरकार तो इन्हें तोड़ेगी ही। हम अपनी मजूरी क्यों छोड़े। हम नहीं तोड़ेगे तो कोई दूसरा आकर तोड़ेगा।"[34]

बसन्ती उपन्यास में दर्दनाक दृश्य है। बस्तियाँ उजाड़ना उज़डी हुई बस्तिययों का ट्रकों में भर कर अन्यत्र पहुँचाना। इसतरह वे अपना सामान कुछ चीजों को पहचान भी नहीं सकते। उन लोगों को बेकार पड़ी हुई जमीन पर झोंपडी बाँधना भी मुश्किल है वह भी गैरकानूनी होता है।

इसप्रकार "बसन्ती" उपन्यास में दिल्ली की झोपडियों में रहनेवाले लोगों का जनजीवन और पूँजीपतियों के साथे विद्रोह और संघर्ष के साथ सामाजिक जीवन के यथार्थ चित्र को प्रस्तुत किया है।

बसन्ती का कथानक

"बसन्ती" उपन्यास में भीष्म साहनीजी ने एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को सामने रखकर रचना की है। आधुनिक काल में औद्योगीकरण के कारण बदली हुई सामाजिक व्यवस्था की पार्श्वभूमी में "बसन्ती" की रचना हुई है। इसमें जनसामान्य लोगों की आर्थिक तनावों के कारण उनकी हालतों को स्पष्टता से व्यक्त किया है।

"बसन्ती" उपन्यास के जनमजदूर सूखा, अकाल और बाढ़ के प्रभाव से अपने गाँव छोड़कर राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और दक्षिण भारत से रोजगार की तलाश में दिल्ली चले आए हैं। इन जनमजदूरों में अनेक जाति और धर्म के लोग हैं। कोई कारागीर, मोची, धोबी आदि अलग-अलग लोग मजदूरी करके पेट भरने के लिए दिल्ली आए हैं। औरते, पुरूष छोटे बच्चे भी मजदूरी करते हैं। वे

दिनभर किसी स्थान पर रोजगार करते हैं और रात के समय अपनी झोपडियों में वापस आ जाते हैं। ईंटो-पत्थरों के बीच झोपडियाँ खड़ी थी। उसी में वह दिनभर मजदूरी की कमाई से एक वक्त की रोटी सेकते थे। औरते लोकगीत गाती हुई अपने आपको सुखी मानती हैं। ये औरतें चौका-बर्तन करने की नौकरी और इमारतें बनाने के काम पर मजदूरी भी करती है। सभी मजदूर जब झोपडियों में लौट आते हैं, उस वातावरण में स्निग्धता आती है, मुहल्ला बनकर ही रहता है। उनकी झोपडियाँ के आसपास नये मकान बनकर तैयार हो जाते हैं, तो झोपडियाँ वहाँ से उठ जाती, मजदूर हट जाते। जहाँ पर इन मजदूरों की झोपडियाँ थी वहाँ पर इन अमीर लोगों की आँगनों की दीवारे बन जाती। वह जगह देखकर पता भी नहीं चलता कि कभी यहाँ झोपडियाँ थी।

"बसन्ती" की बस्तियाँ बार बार उज़ाडी जाती है। इस उपन्यास में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बस्तियाँ सामान्य मजदूरों की उजाड़ी जाती है, जो लोग उनके यहाँ सूखा, अकाल होने के कारण रोजगार की तलाश में शहर आए हैं। इन गरीब जनमजदूरों की झोपडियाँ उजाड़ देने से व्यापारी, दूकानदारों को प्रसन्नता मिलती है।

"मार्किट के बड़े-बड़े दूकानदार और कितने ही मनचले दूकानों के बाहर आकर खड़े हो गए थे और खोमचेवाले, नाई, धोबी, मोची, पटरी पर बैठकर धन्धा करनेवालों के खदड़े जाने का तमाशा देख रहे थे।" [35]

"बसन्ती" नाम की लड़की और दिनू बुलाकी, ये सब लोग इस झोपड़ी में रहते हैं। उनकी ही झोंपडियाँ बार-बार टूटने और फिर स्थापित होना इस बात का संकेत लेखक ने अपने उपन्यास में दिया है। उनका इसके पीछे एकही उद्देश्य था कि आज़ादी साधारण लोगों को नहीं मिली, अपितु उसका सर्वाधिक लाभ पूँजीपतियों और नेताओं, अधिकारियों, अमीरों को ही मिला है।

दिल्ली जैसे शहर में इन मजदूरों के साथ इतनी बड़ी नाइन्साफी होती है कि उनकी झोपडियाँ बार-बार उजाड़ने से उन राजमजदूरों ने विरान टीले पर अपनी झोपडियाँ कायम की। लेकिन यह भी झोपडियाँ अधिकारी के आदेश से पुलिस

की मदद से तोड़ दी जाती है। लेखक ने पुलिस की कारगुजारी को भी स्पष्ट किया है। इतनी बड़ी झोपडी पुलिस वाले अधिकारी के आदेश से कुछ घंटो में तोड़ नही सकते इसलिए उन झोपडियों में रहनेवाले लोगों को बीस रूपए मजदूरी देने के लालच देकर बस्ती के ही राज-मजदूरों को मेहरून जैसे लोगों पर काम सौंप दिया जाता है।

इससे स्पष्ट होता है - "यहाँ भीष्मजी बड़े खामोश ढंग से इस तथ्य को उजागर कर रहे हैं कि पूँजीवादी व्यवस्था में किस तरह श्रमिक पहले खुद एक वस्तु में बदलता है, अर्थात दूसरों की शर्तों पर अपना श्रम बेचने के लिए मजबूर होता है और फिर अपने श्रम और श्रम के उपकरणों के प्रति धीरे-धीरे "अजनबी" का शिकार होकर अंततः अपने समूचे घरबार और परिवेश के प्रति भी पराया होने लगता है।"[36]

इस तरह इन दो-चार पूँजीपतियों के कारण यह लोग अपनापन अपने परिवार में एक-दूसरे के प्रति ममता, मोह, वैयक्तिता सब तोड़ डालते हैं ये लोग वह सामाजिक जीवन के प्रति भी इस पैसे के कारण उदास अजनबी बन जाते हैं।

इसमें मध्यवर्गीय लोगों का भी चित्रण किया है। जब रमेशनगर में लोग इन लोगों की झोपडियाँ तोड़ने का तमाशा देखते हैं, तो उनमें से कोई उन्हें नही रोकता। इनमें से बहुत से लोगों को वे जानते थे। इन गरीब बेसहारा लोगों को कोई भी मदद नहीं कर सकता "आहुजा" साहब जैसे लोग भी अमानवीयता कानून को दर्जा देते हैं।

सरकारी अफसर लोग इन निम्नवर्गीयों के साथ दो मिठ्ठी बाते करने के लिए भी तैयार नहीं होते, इस उपन्यास में हीरा नाम का मजदूर कहता है - "अरे बोला तो मीठा, काम तो होगा, नहीं होगा, यह तो भगवान के हाथ में है, पर बोला तो मीठा हमसे कडवा बोलकर तुम्हे क्या मिलेगा।...हम तुम्हारे द्वार पर आए हैं, हमारी पगड़ी तो नहीं उछालो...हमारे साथ बोलो तो मीठा।"[37]

इससे स्पष्ट होता है कि अफ़सर लोग जानवरों से बेहत्तर इनकी जिंदगी मानते हैं और उनके तरफ इसी नज़र सेदेखते हैं जैसे हम एखाद सड़क के जानवरों को देखते हैं। बाते करना तो दूर ही है।

यह निम्नवर्ग के लोग महानगर दिल्ली में झोपडियों में रहते हैं, लेकिन वह अपनी ग्रामीण जीवन की रूढियाँ, अंधविश्वास, परंपरा भूले नहीं वह सबका पालन करते हैं। थोडे ही लोग हैं लेकिन इनमें पंचायत है। पंचायत में सब लोक इकट्ठा बैठकर शादी ब्याह रचाते हैं। उन लोगों में से एक मेन पुरूष होता है उसके कहने पर सब चलते हैं। लेकिन ईन लोगों को ज्यों ज्यों समस्या आती है उसका हल पंचायत नहीं कर सकती। उनमें एक की बेटी ड्राईवर के साथ भाग जाती है। पंचायत कुछ भी नहीं कर सकती। यह पंचायत यह भी फैसला करती है चौदा साल की बसंती कि शादी बूढ़े बुलाकी के साथ किया जाए। इससे स्पष्ट होता है कि यह लोग क्रूर और अमानवीय हैं।

बसंती के पिताजी अहीर चौधरी चौदह साल की बसंती की शादी साठ साल के लंगडे दर्जी बुलाकी से करना चाहता है। लेकिन बसंती इस बूढ़े के साथ शादी करना नहीं चाहती। फिल्मे देखकर वह प्रेम भावना को महत्व देती है और जो रूढि परंपरा है उसका विद्रोह कर देती है। दिनू नाम का लड़का उसे बहुत चाहता था। उसके साथ एक दिन सरदार लड़के की वेशभूषा पहन दिनू के साथ साईकिल पर भाग रही है, तो उसे कभी ऐसा लगता है कि मैं फिल्म की अभिनेत्रियो या नायिका के समान ही भागकर दिनू के साथ विवाह करने जा रही हूँ। लेकिन फिल्मों में अभिनेत्रियों का काम झूठा होता है। बसंती तो जो साहस करती वह सच्चा है। वह धोखे की तरफ खुद भाग रही है। भीष्म साहनी फिल्मों का उदाहरण देकर हिन्दी फिल्मों का असर निम्नवर्ग में पैदा हुई अल्हड़ बसंती पर किस प्रकार होता है, इसका चित्रण किया है। दिनू की कोठरी में जाने के बाद उसी रात बसन्ती भगवान की मूर्ति के सामने खडे होकर, माथे पर दिनू द्वारा टिका लगाकर ब्याह की रस्म पूरी करती है। लेकिन दिनू सिर्फ उसके साथ कामनामयी प्रेम करता है, उसे बाँहों में लेने के लिए उतावला हो रहा था, वह तो बसंती के इस ब्याह की पद्धति से तंग आ चुका था। बसन्ती में एक स्त्री रूप जागृत होता है और

उसका नारी हृदय रहमी-सहमी विह्वल प्रार्थना भी है। बसंती एक स्त्री होने के नाते भविष्य की कल्पना करने लगती है। दिनू को उसने अच्छी तरह से नहीं पहचाना था। दिनू पर पूरा विश्वास रखकर बुलाकी के साथ होनेवाले विवाह से बचने के लिए अपना घर-बार छोड़कर भाग आयी थी। वही दिनू अपने दोस्त बरडू को तीन सौ रूपए में बसन्ती को बेचकर अपनी ब्याहता पत्नी के पास गाँव भाग जाता है। उसके बाद वह दिनू के बच्चे की माँ बनने वाली थी, वह पिता के घर वापस आती है और फिर उसके पिताजी बसन्ती का ब्याह लँगडे बुलाकी के साथ करते हैं। वास्तव में उन्होंने बसन्ती को सौ रूपये लेकर बेच दिया है, अहीद चौधरी उसे ब्याह करना ही कहता है। बसन्ती की बड़ी बहन का ब्याह भी गाँव में एक बूढ़े व्यक्ति से कराया है। कुछ दिनों के बाद जब दिनू अपनी पत्नी के साथ दिल्ली लौट आता है, तब बसन्ती अपने बच्चे के साथ फिर दिनू के पास भाग जाती है। इससे स्पष्ट है कि आज भी निम्नवर्गीय लोगों में स्त्री-पुरूष संबंध की पद्धति यौवन शोषण का खेल चला रहे है। अभी भी जवान लडकियों को बेचा जाता है।

बसंती भावनाप्रधान है, उसके मन में सभी लोगों के लिए प्यार और ममता है। उसे सौतन है यह मालूम हुआ तब वह क्रोधित नहीं बनती तो दिनू से कहती है अपनी पत्नी को गाँव से ले आओ। हम तीनों इकट्ठा रहेंगे मैं सबकुछ उसे सिखा दूँगी। बसंती ने अब दूसरी मुसीबत खुद ने ओढ ली है। अपने वैवाहिक जीवन में सौत रूक्मी के अस्तित्व को स्वीकार है। हर एक औरत में पति और अपने घर के प्रति प्रभाव की भावना होती है। बसंती रोज चौका बर्तन करती है, अपने कमाई पर उसे नाज है। वह बचपन से कभी किसी पर आश्रित नहीं रही है। दूसरों को कमाई करके पालनेवाली औरत है। रूक्मी के प्रति उसके मन थोडीसी देषभावना उत्पन्न होती है जो उसकी कमाई पर अवलंबित है। बसंती निम्नवर्ग में पलनेवाली हिंदुस्थान में नयी औरत का रूप है। वह किसीसे भी डरती नहीं। सामन्ती पूँजीवादियों पर प्रहार कर सकती है। बसंती नारी होते हुए भी, मर्द की तरह उसमें शक्ति है। वह दृढता से चुनौती देकर अपना रास्ता स्वयं तैयार करती है। वह पति दिनू के साथ आर्थिक शोषण के साथ-साथ यौवन शोषण के कारण झगड़ती भी विरोध भी करती है।

भीष्म साहनी ने बसंती के चरित्र में नायिका से लेकर नीचे वर्ग तक सभी मे उसकी सारी खूबियों में कलात्मक सामर्थ्य और सृजनात्मक प्रतिमा के साथ उभारा है।

बसंती फिर एक बार सुखी वैवाहिक जीवन के सपने देखने लगती है। वह दिनू के पास इसलिए गयी थी कि अपने बच्चे के बाप का अधिकार प्राप्त करे और दिनू के साथ रहने से असीम सुख भी मिलता है। लेकिन बसंन्ती इतनी भाग्यवान भी नहीं थी कि उसे सुख मिले उनके पीछे यह विडम्बनाएँ और विषमताएँ ने उसे छोडा तक नहीं था। दिनू एक दिन अपना बच्चा और रूक्मी को लेकर गाँव चला जाता है। फिर बसंती नयी दृढता के साथ पप्पू को लेकर अपने पिता के पास झोपडियों में चली जाती है। बसन्ती दिल्ली शहर में रहने के कारण उस पर पूरा असर शहरी जीवन का पड़ा है। भीष्म साहनी ने बसन्ती के चरित्र पर शहरी जीवन के प्रभाव को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। वह मध्यवर्गीय लोगों के यहाँ चोका बर्तन करने जाती है। उन स्त्रियों की तरह सब श्रृंगार करती है लिपस्टीक लगाती, साडियाँ उनकी तरह पहनती है, वह ट्रान्जिस्टरों पर फिल्मों के गीत सुनाती, उनके तरह बाल बनाती है। वह अपने बच्चे को भी उन लोगों के बच्चे जैसा ही रखती है। उसे अच्छे कपड़े पहनाती है और हार्लिक्स डिब्बेवाला दूध पिलाती है। श्यामा बीबी के यहाँ चौका-बर्तन करने जाती है, वह उसे पूछती है इतने बड़े कपडे कहाँ से लायी तुम ? बसन्ती उत्तर देती है कि बच्चे को अच्छे कपड़े पहनाओ तो भी चोर। अपने पैसों से खरीदकर पहनाओ तो भी चोर।

इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने बसंती का जीवन चित्रित किया है, वह एक संघर्षशील, विद्रोही नारी के रूप में है। अल्हड़ और स्पष्टता से बोलेनेवाली लड़की है। वह जब श्यामा बीबी से बाते करती है उस वक्त उसे स्पष्टता से जवाब देती है - "भगवान कब खुश हुए हैं···? भगवानजी मेरे साथ तो सदा ही मुँह फुलाए रहते हैं····ऐंठकर बोलो तो भी नाराज, हँसो तो भी नाराज, पेड़ पर चढ़ो तो भी नाराज, नीचे उतरो तो भी नाराज····किस-किससे डरकर रहूँ बीबीजी? बापू से ? माँ से ? आपसे ? भगवान से ?"[38]

शहरी जीवन की परिणामस्वरूप उसका अलग ही व्यक्तित्व बना है। बसन्ती के जीवन में जो दुःख, जो समस्या है उन सबका सामना हस्य से करती है। उसमें बहुत अल्हड़ता है।

मध्यवर्गीय लोगों का भी इसमें उदाहरण दिया वे भी उन लोगों में भी कितनी पाखंण्डीयता और अमानवीयता होती है, यह श्यामा बीबी और सूरी दाम्पत्य को लेकर बताया है। श्यामा बीबी के यहाँ बसन्ती काम के लिए जाती है, उसे उन्होंने पनाह दी है। लेकिन उनके गुरू महाराज के कारण गुरू ने आदेश दिया था कि वह किसी एक मनुष्य की सेवा करे, जो सुबह सबसे पहले उसके सामने दिखाई पडे। और दूसरे दिन प्रातः श्यामा बीबी को बसन्ती ही सामने दिखाई देती है। इसी कारण बसन्ती को आसरा दिया था। श्यामा बीबी गुरू की भक्ति के कारण अपने सास ससूर को घर से निकाल देती है। भक्ति का परिणाम सास-ससूर को निकाल देने से पहले ही जा चुके थे। जब बसन्ती का पीछा उनका पिता और बरडू कर रहे थे, तब उसे वह दूसरी जगह रहने का प्रबंध करती है। क्योंकि बसन्ती घर छोडकर चली गयी तो गुरू महाराज को दिया वचन भंग हो सकता है, उस पर कोई मुसीबत आ सकती है। अनिष्ठ हो सकता है। इसलिए बसन्ती की रहने की व्यवस्था सूरी साहब के यहाँ कर देती है। सूरी साहब का संशयी और हृदयहीन चरित्र इस समय बेनकाब हो जाता है वे फौरन अपनी पत्नी से कहते हैं कि "अपनी चीजों को देख-सँभाल लिया है ना ? इन लोगों का कोई भरोसा नहीं जिस बर्तन में पीते हैं, उसी में छेद करते हैं। कही कुछ उठाकर चम्पत न हो गयी हो।"[39] इससे स्पष्ट है कि श्यामा बीबी और सूरी दाम्पत्य बसन्ती को चोर समझते हैं। श्यामा बीबी को लगता है कि बसन्ती जैसे मजदूर वर्ग की औरतों के बच्चो को नए कपड़े कैसे मिल सकते हैं ? बसन्ती ने हार्लिक्स का डिब्बा चुराया ही होगा। इसप्रकार लेखक ने मध्यवर्ग की विडंम्बना, हृदयहीनता स्पष्ट की है।

इस उपन्यास में बसन्ती का चरित्र झोपडी में पलनेवाली लड़की का केंद्रीय पात्र है। उसके बाद बुलाकीराम का भी पात्र महत्त्वपूर्ण है। बुलाकी का भी पात्र

महत्त्वपूर्ण है। बुलाकी साठ साल का बूढा दर्जी है और वह पुरूषत्व से रहित है। उसके आँखों की रोशनी भी शीतल माई के प्रकोप के कारण चली जाती है। इतना कुछ होते हुए भी वह तीस साल से लेकर साठ साल तक शादी की कल्पनाएँ करता है। उसे अपने घर के आँगन में हमेशा बहू के पैरों के नुपूर सुनायी देने लगते हैं, "सारा वक्त उसका घर गृहिणी के लिए सजा रहता, सुहाग सेज सजी रहती, गृहिणी के लिए चटकिले रंगों और बढ़िया काटवाले कपडे अलगनियों पर टँगे रहते, दरवाजे पर बंदनवार लगा रहता, कौन जाने किस वक्त किस्मत खुल जाये और अर्द्धांगिनी पायल बजाती घर के अन्दर प्रवेश कर जाये।"[40]

कपड़े सीने में उसकी हाथ सफाई है। बुलाकी ही बसंती के पिताजी के नौ सौ रूपए देकर बसंती के साथ ब्याह करना चाहता है। जब बसंती दिनू से धोखा खाकर वापस आती है तब उसका ब्याह बुलाकी के साथ किया जाता है। वह भी गर्भवती बसंती को स्वीकारता है, क्योंकि वह पुरूषत्व रहित है। बुलाकी के बारे में बसन्ती का मत बिलकुल अच्छा नहीं लेकिन आर्थिक समस्या के कारण वह उसके पास रहना पसन्द करती है।

इस उपन्यास में दिनू नाम का पात्र भी बहुत ही चालाक, स्वार्थी और धोखेबाज है। वह बसन्ती के साथ खिलवाड करता है। भावनामयी अल्हड़ बसन्ती को अपने ढोंगी प्रेम-से आकर्षित कर उसे फसाता है और वह अपने दोस्त को तीन-सौ रूपए लेकर बेच देता है। वह गर्भवती थी, उसे बिलकुल उसकी दया नहीं आती। फिर एक बार बसन्ती पुरूषत्व का सुख मिलने के लिए दिनू के पास रहती है। दिनू को वह खुद कुछ दिन अपनी कमाई पर पालती है। लेकिन वह बहुत बड़ा धोखेबाज निकला। बसंती जीवन के साथ खेलता हुआ उसके जीवन को उद्ध्वस्त कर देता है।

"बसन्ती" उपन्यास में दु:खवर्दक भयानक दृश्य बस्ती तोड़ने का है। जनसामान्य लोगों की जिंदगी के साथ ये मध्यवर्गीय और पूँजीपति खेलते हैं। उनके घर का सामान, बर्तन बाहर फेंक देते, पटरीवालों की दूकान लूटते हैं। लेखक ने इस उपन्यास में यह भी स्पष्ट किया है - आज़ादी जनसामान्य को नहीं मिलेगी

बल्कि आज़ादी का सर्वाधिक लाभ पूँजीपतियों, ठेकेदारों, व्यापारियों और बड़े सरकारी अधिकारियों को ही मिला है। भीष्मजी ने इस में झुग्गी झोपडियों के लोगों के जीवन को उसकी सम्पूर्णता में चित्रित किया है।

बसन्ती आखरी वक्त थक कर फिर अपने पिताजी के पास आती है, लेकिन उपन्यास के अंत तक बसन्ती के जीवन की ट्रेजडी चलती रहती है। वह जब अपने पिताजी के झोपडी की ओर जा रही थी तब वह श्यामा बीबी से कहती है - "बापू का थैला उठाकर ले गये हैं, बीबीजी वह लॉरी के पीछे पीछे भाग रहा था। माँ भी भाग रही थी। मैं उनकी ओर जा रही हूँ। देखूँ कहाँ पर है।" और वह पप्पू को लेकर जाती है। [41]

इसह प्रकार बसन्ती अंत तक समाज के साथ संघर्ष करती हुई जीती है। हर वक्त नये उत्साह से जीती है। "बसन्ती" में निम्नवर्गीय लोगों के जीवन की समस्याएँ चित्रित की है।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में शुरू से ही बस्ती तोड़ने का भयानक दृश्य प्रस्तुत किया है और अंत में भी बस्ती तोड़ने का दृश्य दिखाया है। इसमें लेखक ने निम्नवर्गीय मटमैले जनों के धूसर और बदरंग जीवन की मध्यवर्गीय भड़कीले रंगों में मिलाकर स्वाभाविक सादगी के साथ प्रस्तुत किया है। कितनी बार पुलिसवाले पटरीवालों की दूकाने लूटते, ठेलेवाले के फल गिराते, खोमचेवाले के बर्तन फोडते दिखायी देते हैं। बसन्ती की झोपडी उनका तन्दूर भी तोड़ डालते हैं, लेकिन आखरी वक्त तक बसन्ती का विश्वास और मनोबल तो कोई भी तोड़ नही सकता। लेखक ने इस उपन्यास में अनेक दर्दनाक दृश्यों के साथ फैली हुई त्रासदी का गहरा चित्रण किया है। और उसके साथ चौदा बरस की अल्हड़ बालिका बसंन्ती की प्रेमकहानी उनके जीवन में हर पल की समस्याएँ यह इसमें महत्त्वपूर्ण है। इसमें हर एक दृश्य पाठक के मन को बाँध लेता है।

कुछ लोग परिवारिश के लिए शहर में जाते हैं, शहर में उनके सामने कितनी बड़ी-बड़ी समस्या आती हैं, शहरी जीवन का उन पर कितना बड़ा प्रभाव पड़ता है। हमारे समाज में कौनसे लोग पूँजीवादी हैं और वे इन लोगों का किस तरह शोषण करते हैं, और पूँजीवादियों का शिकार ये निम्नवर्गीय लोग क्यों होते हैं इस सबका यथार्थ चित्र लेखक ने कथा और कुछ पात्रों के माध्यम से हमारे सामने कलात्मकता के साथ रखा है।

इसप्रकार भीष्म साहनी ने इसमें बस्ती के लोगों का जन-जीवन, हलचल, चेतना, संघर्ष और विद्रोह को रूपायित करने के लिए समाजवादी और यथार्थ के धरातल पर सभी सूक्ष्म और विस्तृत चित्रों को छायांकित किया है। इस उपन्यास का शिल्प भी रोचक बना है। लेखक ने मध्यवर्ग का चित्रण भी विशिष्ट रूप से किया है। बसंती का चित्रण सफलता, असफलताओं को लेकर किया है। "वर्तमान पूँजीवादी समाज व्यवस्था में रहनेवाले लोगों के सामाजिक अन्तःसम्बन्धों को भीष्म साहनी ने गहराई से निरूपित किया है।"[42]

इस उपन्यास की भाषा भी सर्वसामान्य व्यक्तियों की भाषा है।भीष्म साहनी का यह उपन्यास कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उच्च दर्जे का उपन्यास बनाने में उन्हें सफलता मिली है। "बसन्ती" हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में अपनी नयी पहचान करवाता है।

3.5 "बसन्ती" के प्रमुख पात्र

प्रस्तावना

उपन्यास में कथावस्तु, भाषाशैली, देशकाल वातावरण के साथ-साथ पात्रों का चरित्र ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उपन्यास ज्यादातर दो पात्र प्रमुख और अन्य पात्र गौण होते हैं। इस प्रकार भीष्म साहनी के उपन्यास में भी पात्र "प्रतिनिधि पात्र" है वे जीवन के विभिन्न वर्गों और स्तरों के लिए गए हैं। उन्हों अपने उपन्यास में चरित्र चित्रण करने के लिए भिन्न पद्धतियों का अवलंब किया है। उनके उपन्यासों में समाज के सभी स्तरों के वर्गों के पात्र आए हैं। उनकी परिस्थिति उनके आसपास

के वातावरण का भी वर्णन उन्होंने उसी तरह किया है झोपडीयाँ में रहनेवाले लोगों की भाषा उनके वर्णन भी उसी प्रकार ही है।

उपन्यास में कथा निर्मिती में पात्रों का बड़ा योगदान रहता है। बसन्ती उपन्यास में ज्यांदा से ज्यादा निम्नवर्गीय पात्र हैं और कथा को चलाने के लिए मध्यवर्ग और पूँजीपतियों का भी समावेश है। इस उपन्यास में "बसंन्ती" नायिका के रूप में दिनू, बुलाकी, मेहरू, बसंती के पिता चौधरी आदि पात्र इसमें हैं।

बसंती

इस उपन्यास में प्रमुख पात्र के रूप में "बसन्ती" को चुना जाता है। भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में दिल्ली की झुग्गी-झोपडियों में रहनेवाले निम्नवर्गीय समुदाय के जीवन का चित्रण किया है। गाँवों में सूखा अकाल होने के कारण ये लोग दो-वक्त की रोटी के लिए शहर में आये हैं। उन लोगों में एक चौधरी नाम का बूढ़ा है उसे चार बेटियाँ और कुछ बेटे हैं। उसकी आर्थिक अवस्था बहुत बुरी है। इन सबको वह रोजी-रोटी भी नहीं दे पाता उसकी ही बेटी का नाम बसंन्ती है।

बसन्ती के पिता ने उसकी बड़ी बेटी का विवाह गाँव में एक बूढ़े व्यक्ति से करवाया है और उनकी दूसरी बेटी बसंती को भी लँगडे साठ साल के बुलाकी को नौ सौ रूपए लेकर बेच दिया है। लेकिन बसन्ती विद्रोह और संघर्षशील ऐसी चौदा साल की लड़की है, उसमें अल्हड़पन, हास्य, व्यंग्य, गरीबी, उपेक्षा, अस्थिरता, विद्रोह, सामंन्ती और पूँजीवादियों के साथ विरोध करने की चेतना उसमें है।

शहरी जीवन का प्रभाव बसंती पर पड़ा है। वह इस बूढ़े के साथ ब्याह करने से साफ इन्कार करती है। वह बुलाकी से विवाह करना नही चाहती। फिल्मे देखकर बसन्ती के अन्दर अनमेल विवाह और प्राचीन रूढियों के खिलाफ बसंती कदम उठाती है। उस पर फिल्मों का असर पड़ा है, वह फिल्मों में होता है, उसी तरह करना चाहती है। वह एक दिन दिनू नामक होस्टेल में काम करनेवाला लड़का है, उसके साथ सरदार लड़के की वेशभूषा में भागकर विवाह करती है। उनके मन

में फिल्मों की तरह सुखद मधुर कल्पनाएँ कर रही है। बसंती खुद को फिल्मों की अभिनेत्री मानती और दिनू को नायक। वह एक कोने में पड़ी भगवान की तस्वीर के सामने खडे होकर दिनू बसंती को टिका लगाता है, इस तरह की उनकी शादी हुई है वे एक-दूसरे को पति-पत्नी मानते हैं।

बसन्ती नयी पीढी की बच्ची है, लेकिन दिनू तो कोठरी में जाने के बाद बसंती को बाँहों मे लेने के लिए उतावला हो रहा है। वह दिनू से कहती है, "अब हाथ पकड़ा है तो छोडना मत" बसंती तो स्त्री सुलभ नाते भविष्य की कल्पनाएँ कर रही थी किन्तु दिनू का स्थान उसने ठीक ढंग से नहीं झाँका था। कुछ दिनों के बाद वे एक-दूसरे के साथ झगड़ते हैं तो दिनू कहता है, "मैंने तुमसे शादी नहीं की है, तू मेरे साथ भाग आयी है, मैने मना नही किया।"[43] इसप्रकार कई दिनों के बाद दिनू अपने दोस्त बरडू को तीन सौ रूपये में बसन्ती को बेचकर अपनी ब्याहता पत्नी के पास गाँव भाग जाता है। बसन्ती बुलाकी के साथ होनेवाले विवाह से बचने के लिए भागकर आयी थी। जो उसके पिताजी का व्यवहार था, दिनू भी वही करता है।

बसंती गर्भवती थी उसी अवस्था में अपने पिता के घर आती है, बाद में बुलाकी के साथ ब्याह दी जाती है। बुलाकी बहुत खुष होता है। बुलाकी बार-बार कहता है, "मैं ने कहाँ था बसंती रानी आयेगी, एक दिन जरूर आयेगी।"[44] इस लालची स्वभाव से बसंती तंग आ चुकी थी। दिनू दिल्ली में वापस आने की खबर मिलते ही वह अपना बच्चा पप्पू को लेकर चली जाती है। बसंती सरल स्वभाव स्पष्टता से बोलनेवाली लड़की है वह परिस्थितियों के साथ चलती है। बसंती और दिनू दोनों रहते हैं और बसंती ही दिनू की ब्याहता पत्नी रूक्मी को भी गाँव से ले आने के लिए कहती है। बसंती ने अपने जीवन में सौत रूक्मी को भी स्वीकारा है। वह तय करती है अब घर बनाए रखना ही ठीक है। वे दोनों पति-पत्नी बसंती के कमाई पर ही अवलंबित है। बसंती चौका-बर्तन करके कुछ पैसे कमाती है, उसे अपने कमाई पर नाज है। वह खुद किसी पर निर्भर नहीं। सामंती या पूँजीपतियों के साथ संघर्ष करने में भी कभी कम नहीं पड़ती। लेकिन उसके अल्हड़ स्वभाव के कारण वह पूरी तरह से बह जाती है। बसंती चुनौती देती है इस

दुनिया में और हिंदुस्थान में एक नयी संघर्षशील नारी का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया है।

भीष्म साहनी बसंती इन उपन्यास में एक निम्नवर्गीय नारी को झोंपडी से उठाकर उसे पाव रखने के लिए थोड़ासा हक नहीं इस पुरूषप्रधान देश में वह इतनी संघर्षशील है, तभी भी उसके साथ पाशविक व्यवहार हुआ है। बसंती की तरह अनेक इस देश में स्त्रियाएँ हैं। जो इस परिस्थिति से लड़ते हुए जीवन जीती है। लेखक ने बसंती का चरित्र केंद्र में रखकर पूरा उपन्यास विशिष्टता से बनवाया है।

बुलाकी

"बसन्ती" उपन्यास में बुलाकी नामक पात्र है। भीष्म साहनी के दृष्टि से यह पात्र दिलचस्प पात्र है। उपन्यास पढ़ते वक्त पाठकों को यह पात्र मनोरंजक लगता है। बुलाकी का पात्र जितना दिलचस्प है, उतना जटिल भी है। लेखक ने इस पात्र का चित्रांकन वस्तुनिष्ठ और तल्लीनता के साथ अन्य निम्नवर्गीय पात्रों की तरह ही किया है।

बुलाकी साठ साल का बूढ़ा दर्जी है। भगवान पर पूरा भरोसा रखता है, इसी वजह से वह कहता शितला माई के कोप से मेरी आँखे गयी, इन अंधश्रद्धा और कल्पनाओं से तीस बरस अपने घर को आबाद करता रहा। उसकी कल्पना थी घर के आँगन में बहू के नुपूर सुनायी देने लगते, घर के बार उनके घागरे के पल्ले की झलक मिलने लगती है। कोने-कोने से उसकी हँसी सुनायी देती, इन सभी कल्पनाओं से बुलाकी बेचैन होता है और वह वहाँ के लोगों के पास ब्याह की बात चलाता। एक दिन उसे नयन का रिश्ता आया था शादी हुई लेकिन उसके उतावलेपन के कारण वह चली गयी।

उसे कुछ लोग रिश्ते की लालच दिखाकर उससे पैसे निकालते हैं। बुलाकी के बुढ़ापे तक ना ही उसकी कल्पना पूरी हुई न उसे गृहिणी मिली। हर वक्त उसका घर गृहिणी के लिए सजा रहता है। सुहाग रोज सजी रहती, उनके पास

उन्होंने पहले ही गृहिणी के लिए चटकिले रंग के कपड़े बनवाकर रखे थे। उसे अभी भी लगता किसी भी वक्त उसकी अर्द्धांगिनी पायल बजाती घर के अन्दर प्रवेश कर सकती है। बुलाकी तो तीस साल से लेकर साठ साल तक इस तरह की कल्पनाएँ और सपने देखता आया है।

लेखक ने इस पात्र का चित्रांकन सूक्ष्मता से किया हे, दर्जी बुलाकी के दिल की लालसा तो पूरी नहीं हुई। बुलाकी हमेशा चटकिले रंगों का कुरता पहनता आँखों में काजल लगाता सारा वक्त वह दुल्हा बनकर घूमता। वह अभी तक अपनी गृहिणी के लिए बाजार से प्रसाधन वस्तुएँ लाता है - बिंदी, सुर्खी, रिबन, काजल तो कभी मोतियों के हार, क्लिप, परान्दे, इकट्ठे करता रहता है। इतना ही नहीं उसने आगे का भी इन्तजाम किया था बच्चों का पालना भी लाया और उस बच्चे के लिए कुछ खेलने भी लाकर रखे थे। लेकिन शितला माई ने बेचारे पर घोर अन्याय किया था, उसकी आँखे तो ले ली और उसका पुरूषत्व भी छीन लिया है।

अपनी अर्द्धांगिनी और एक बच्चे के इन्तजार में उनके तीस बरस बीत चुके लेकिन अभी तक उसे कही भी आशा की किरण नज़र नहीं आती। कई जगह शादी की बात की तो लोग उसका मजाक उड़ाने लगे। एक दिन उसे चौधरी मिला उसके दो-तीन लड़कियाँ हैं। गरीबी के कारण वह बुलाकी से बात करता है, चौधरी की मजबुरियाँ उजागर करने का काम लेखक ने किया है। बुलाकी लँगडा तो है और पुरूषत्व विहिन है और उम्र साठ साल की इतना सबकुछ होते हुए भी वह घर बसाना चाहता है। गृहिणी के आने की कल्पना से भी वह पुलकित हो उठता है। उसका चेहरा चमकने लगा वह बहुत ही उत्साही दिखाई देने लगा और उसके दिल में हलचल सी मचने लगी।

वह बसंती के साथ ब्याह करता है, बसंती गर्भवती होते हुए भी उसे खुशी से स्वीकारता है। इसके पीछे उसकी अपूर्णता और असाहयता नहीं बल्कि उसकी उदारता और विशाल हृदयता का गुण भी है। उसका चरित्र कहीं भी बनावटी या धोखा देनेवाला नहीं है। उसे अपने लंगडेपन का भी दुःख नहीं है।

बुलाकी भी बसंती की तरह भावनामयी है। बसंती को विदा करते वक्त माँ बाप को दुःख होता है, बुलाकी कहता है, "चौधरी तेरी बेटी अपने ही घर जा रही है" और कहता है, "तेरी बेटी को फूलों की सेज पर रखूँगा।"[45] बुलाकी अपने अपूर्णता के कारण उसका पति तो नहीं बना लेकिन उसके लिए कुछ कमी नहीं की थी उन्होने उसे पता होते हुए भी बसंती के पेट में दिनू का बच्चा है, तभी भी वह बसंती के बच्चे को कपड़े लाता है। यह सब देखकर उसका तनाव ढिला पड़ा वह भी खुश है। कभी-कभी उसे लगता है, "बसंती को लगा जैसे पहली बार आकाश के अथाह असमी को देख रही है।"[46] बसंती के साथ ब्याह होने के कारण वह बहुत ही खुश है। वह सभी से बड़े ही उत्सुकता से कहता- "मैं कहूँ बसंती रानी आयेगी, एक दिन जरूर आयेगी···" इतना भावना विव्हल होकर कहता कि कभी-कभी उसके मुँह लार तक टपक जाती, कभी कहता "सुबक-सुबक पैर। मेरी रानी के सुबक-सुबक पैर।"[47]

इस हरकते से बसंती तंग आ चुकी थी। उसे लगा था कि शादी के बाद वह मेरे साथ अन्य मर्द जैसा व्यवहार करेगा, मुझपर हुक्म चलायेगा, अपना अधिकार दिखायेगा। यह उसकी आदते उसे बिलकुल पसन्द नहीं थी। बुलाकी बसंती को छोडकर चले जाने की कल्पना से भी भयभीत सा होता है, मन में ही कहता है - "मुझे छोडकर नहीं जाना, बसंती रानी। मुझे छोड़कर नहीं जाना।"[48] बसंती के जीवन में दो प्रकार के दो पुरूष आये हैं, एक सिर्फ उससे प्यार करता है और दूसरा वासनामयी प्यार करता है। दिनू धोखेबाज, स्वार्थी, लंपट है, अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करते हुए भी कुछ दिन के बाद ही वह अपने मित्र बरडू को बेचकर भाग जाता है। बसन्ती के कोमल भावनाओं, आत्मीयता की उसे बिल्कुल कदर नहीं है, वह सिर्फ उसके शरीर का प्यासा है।

"वह जब कभी मना करती तो वह तमककर बोलता "एक झापड दूँगा। तुझे लाया किसलिए हूँ।"

बुलाकी बसंती को चाहता है, लेकिन वह उस बूढ़े के प्यार को समझ नहीं सकती इन्हीं कारणों से वह ठोकरे खाकर घूमती है।

2.6. पात्रों के कथोपकथन

प्रस्तावना

उपन्यासों में लेखक और पात्रविशेष के उद्देश्यों का सामाजिक घटनाओं का मनोनीत उद्‌घाटन कथोपकथन के माध्यम से ही संभव है। उपन्यास का ये महत्त्वपूर्ण तत्व है, जो कथा विकास और पात्रों के चित्रण में साहयक होता है।

संवादों के कुछ उद्देश्य -

1. कथानक का विस्तार करना
2. पात्रों की व्याख्या करना
3. उद्देश्यों को स्पष्ट करना

कथानक में सजीवता लाने में संवाद उपयुक्त हैं। कथानक का विकास होता है, बसन्ती इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने पूँजीवादियों के अत्याचारों के कारण श्रमिक एक वस्तु में किस तरह बदलता है, वह इने-गिने लोगों के कहने पर श्रम बेचने के लिए मजबूर होता है, आखरी वक्त वह खुद सामाजिक अजनबीपन में बदलने लगता है। इसका उदाहरण इन मजदूरों के संवादों से मिलता है।

मध्यवर्गीय लोग मेहनतकश और मजदूर लोगों के साथ निर्दयता के साथ बर्ताव करते हैं, यह उन लोगों के संवादों से पता चलता है।

कथोपकथन से पात्रों की विचारधारा का प्रतिबिम्ब उमटता है। इसी माध्यम से लेखक चरित्रों की न केवल व्याख्या करता है, अपितु उनके विषय में विविध जटिल परिस्थितियों तथा अन्तर्द्वंद संबंधी प्रत्यक्ष बोध करवाता है। भीष्मजी ने बसंती की जटिलता को अत्यंत उत्कृष्टता से उनके ही संवादों से व्यक्त किया है।

संवाद

भीष्म साहनी ने "बसंती" इस उपन्यास में संवादों की रचना उत्कृष्ट की है। निम्नवर्गीय लोगों के संवादों से पता चलता है कि इन्हें रोजी-रोटी के लिए इन अधिकारी, पूँजीपति और शोषक वर्ग के साथ कितना संघर्षशील जीवन

बिताना पड़ता है। हमारे देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद भी दो इंच जगह पर इन मजदूरों का हक्क नहीं दिया जाता।

पुलिस अधिकारी बस्ती तोड़ने आते और जो मजदूर बस्ती में झोपडियाँ बनवाकर रहते हैं उन्हें पैसों की लालच दिखाकर बस्ती उन्हीं लोगों के हाथ से तोड़ी जाती है। उनकी औरते फटकारती तो वे कहते हैं, "अब अपनी कहाँ है। सरकार की है।" इस पर भीड़ में से एक आदमी चिल्लाया, मैने भी तो अपनी कोठरी बनायी थी।" बनायी थी तो बनायी थी, उपर से जवाब आया "सरकार तो इन्हे तोड़ेगी ही। हम अपनी मजूरी क्यों छोड़े। हम नहीं तोडेंगे तो कोई दूसरा आकर तोडेंगे।"[49]

यहाँ भीष्मजी बड़े खामोश ढंग से तथ्य को उजागर कर देते हैं। आहुजा साहब मूलराज से कहते हैं, "पक्की कोठरियाँ बनाना ही नहो, सरकारी जमीन पर कब्जा करना ही गैर कानूनी है। बैठे-बैठाये मुफ्त में अपनी कोठरियाँ खड़ी कर ली।"[50] इससे अधिकारियों और पूँजीपतियों की अमानुषिकता स्पष्ट होती है।

बसन्ती अपनी शादी के बारे में श्यामा बीवी से बताती है, "हमारी कोठरी के पीछे जो बरामदा है ना, बीबीजी वहाँ आले में भगवानजी की मूर्ति रखी है, उसी के सामने हम दोनो खड़े हो गये और ब्याह करवा लिया।"[51]

"पंडित कोई नहीं था ?"

"पंडित किसलिए बीबीजी ? हम दोनों ने मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर ब्याह करवा लिया। अनुराधा फिल्म में भी तो ऐसे ही हुआ था।"

भीष्म साहनी ने शहरी जीवन के रोमांटिसिज्म का चित्रण कथा को रोचक बनाने के लिए किया है। इससे स्पष्ट निम्नवर्गीय बसंती का जीवन फिल्म क्षेत्र से भी प्रभावित लगता है।

बसंती संघर्षशील और ममतामयी है। उसमें चोट सह जाने की ताकत है और वह चोट भी कर सकती हैं।

"तूने बरडू से पैसे लिए थे ?"

"कौनसे पैसे ? क्या बक रही है ?"

"तीन सौ रूपये ? बोल लिए थे तीन सौ रूपये ?"

दिनू को तीखे प्रश्न करती है।

"तुम्हे बोल जो दिया मैंने उसे साइकिल बेची थी और उसने सत्तर में साइकिल लौटा दी ।"

"बाकी पैसे उसे फिर दूँगा। अब बक-बक नहीं करो।"

"वह कहता था, तू मुझे उसके हाथ बेच गया था।"

दिनू चूप ही रहा।

"बोल, बोलता क्यों नहीं ? तू मुझे उसकी रखेल बना गया था ?"[52]

बसन्ती तड़पकर उठती है और विद्रोही वृत्ति के दिनू पर गरस-बरस उठती, सबकुछ सह जाती है। इस वाक्य से बसन्ती की असहायता, मासूमियत नज़र आती है।

बसन्ती श्यामा बीबी के यहाँ चौका-बर्तन करने के लिए जाती थी, उसका बसन्ती पर बिलकुल भरोसा नहीं है। वह एक दिन रोक लिया और कहा -

"थैले में क्या कुछ उठाये घूम रही है, बसन्ती ? दिखा तो इसमें क्या है ?"

"कुछ नहीं बीबीजी, पप्पू के कपड़े हैं..."

"देखू तो।" और श्यामा ने आगे बढ़कर उसके थैले में हाथ डाल दिया।

थैले के अन्दर एक बड़े से डिब्बे पर उसका हाथ लगा। "यह क्या है?" श्यामा बीबी ने कहाँ और से बाहर निकाल लिया। बड़ा-सा हार्लिक्स का दूध का डिब्बा था।"[53]

भीष्म साहनी ने इससे इन लोगों में शहरी प्रभाव के कारण परिवर्तन को दर्शाया है, मजदूर वर्ग भी अपने स्वप्न अरमानों के लिए संघर्षरत हैं, अपनी परम्पराओं को भी भूल सकते हैं। लेकिन यह मध्यवर्गीय श्यामा बीबी की आँखों

में सद्भावना और शंका के रूपों का अनुभव दिखाता है इन औरतों में जो आदर्श है वह थोथे आदर्श हैं, यह हमें स्पष्ट दिखाई देता है।

सूरी साहब का बसन्ती के बारे में तर्क है " "इसकी हालत देखते हो क्या इस हालत में हम इसे घर से निकाल देते ? हम इन्सान है या कसाई ?" तुमने तो कभी यही नहीं जाना कि जीती है या मर गयी। क्या हम भी इसे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड देते ?" वह हमारी क्या लगती है ? हमें क्या फर्क पड़ता है कि वह कहाँ रहती है, कहाँ सोती है, कहाँ भट्कती फिरती है मगर नहीं। हमें इस बात में गैरत आती है, पर तुम्हें नही आती।"[54]

बसन्ती के इस हँस्य के पीछे बहुत बड़ा दुःख छिपा हुआ है। वह अपनी छोटीसी उम्र में बड़ी से बड़ी चोट खा चुकी है अब उन्हें दुख की आदत जो हुई है। उनके मुख से निकले एक-एक लब्ज से दर्द महसूस होता है।

इसमें भीष्म साहनी ने धरती से उखड़े हुए लोगों की परिवेशजन्य विषमताओं में पली बसन्ती के शब्दों मे स्पष्ट किया है।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी ने "बसन्ती" उपन्यास में पात्रों का उद्घाटन उनकी पहचान पात्रों के संवाद से ही की है। दो या अधिक पात्रों में कथोपकथन चलता है। पात्रों की भाषा जीवन की वास्तविकता ही स्पष्ट कर देते हैं। संवाद छोटे-छोटे ही होने से पाठक पढ़ते वक्त ऊब नहीं जाता।

भीष्मजी ने इसमें बसंती के माध्यम से सामाजिक यथार्थ में होनेवाले परिवर्तनों को दर्शाया है। उनके हर एक संवादों से मन की संवेदनाएँ स्पष्ट की है। कुछ संवाद तो दबी हुई चिंगारी की तरह बाहर निकलते हैं। इसमें झुग्गी झोपडियों में रहनेवाले लोगों के संवाद उन लोगों जैसे ही है और पूँजीपति मध्यवर्ग के लोगों के संवादों से वे लोग इन लोगों की आर्थिक समस्या के कारण दबा दिये रहे हैं। इन लोगों के संवादों से स्पष्ट किया है।

इससे यह स्पष्ट होता है, ये मध्यवर्गीय लोग याने सूरी साहब जैसे लोग संशयी और हृदयहीन चरित्र उसके शब्दों से बेनकाब हो जाता है। लेखक ने इन लोगों की पाखंण्डीता का चित्रण किया है।

माँ-बाप अपने बेटी को विदा करते समय उन्हें कितना दुःख होता है वह बेटी गरीब बाप की हो या अमीर की। बसंती के भी माँ-बाप बार-बार उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं, चिरायु और सुखी जीवन की कामना करते हैं "दूधो नहाओ पूतो फलो····"

शादी के वक्त यही पत्थर जैसे कलेजेवाला चौधरी भी पिघला हुआ दिखाई देता है और कहता है "लडकी अब तेरी है, बुलाकीराम तेरे साथ जुबान की थी, सो पूरी कर दी।" "कलेजे पर पत्थर रखकर बेटी को भेज रहे है। सच मान···"[55] इससे स्पष्ट है, हर एक माँ-बाप अपने संतान का सुख देखना चाहते हैं। बसंती का बाप बूढ़े को ब्याहाता है लेकिन इसके पीछे उनकी आर्थिक मजबूरी है। उन्हें लगता कम-से-कम हमारी बेटी दो वक्त पेटभर खायेगी तो इसके पीछे उनका इतना ही उद्देश्य है।

भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में बसंती का चरित्र में उदात्त और शक्तिशाली नारी का रूप प्रस्तुत किया है। श्यामा बीबी कहती है - "इतने धोखे खा चुकी है पर तू फिर भी होश में नहीं आयी। तू जिंदगी में बहुत दुःखी होगी बसंती।" बसंती कहती है - "जिंदगी क्या होती है, बीबीजी ?" बसन्ती ने कहाँ और हँस दी। उसकी हँसी में पहले जैसी गूँज फिर से सुनाई पडी।"[56]

7. मय्यादास की माड़ी

प्रस्तावना

भीष्म साहनी का चर्चित उपन्यास है "मय्यादास की माड़ी"। इसमें इतिहास के उन कालखंड की कथा है जिस समय अंग्रेजी राज्य आने की सिर्फ सूचना मिल रही थी। उस समय के एक दिवान परिवार की कहानी है।

मय्यादास की माडी जहाँ है, वहाँ छोटासा कस्बा है। उसके आसपास गली-गलियों और मुहल्लों के बीच "मय्यादास" की हवेली है। वही पर घटी घटनाओंकी चर्चा हुई है।

जिस प्रकार "तमस" में भारत विभाजन से पहले पंजाब में होनेवाले घटनाओं का आधार लेकर विभाजन के कारणों को प्रस्तुत किया है। "बसंती" में हमारे भारत देश को आज़ादी मिलने के बाद भी निम्नवर्गीय लोगों का महानगरीय लोगों द्वारा शोषण। वही "मय्यादास की माड़ी" में कुछ पुराने स्मृति के द्वारा इतिहास को प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है। भीष्मजी ने इतिहास को इस उपन्यास द्वारा वर्तमान में लाकर खड़ा कर दिया है। उन्होंने सामन्तवाद के अच्छे-बूरे दोनों भी पक्ष को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है, अधिकतर शोषक वर्ग का ही वर्णन मिलता है।

भीष्म साहनी ने "मय्यादास की माडी" इस उपन्यास के कथानक में जर्जर समाज और जो अंधविश्वास, रूढियों, इर्षा, मान-मर्यादा, नियति को माननेवाले लोगों के झूठे नकाब को तोड़कर प्रस्तुत किया है। अपने हक और सत्ता के लिए विदेशी शासक के साथ अन्तर्गत सम्बन्ध रखनेवाले, अपने अधिकार का दुरूपयोग करनेवाले लोंग। जनसामान्यों का आक्रोश और ढ़हती हुई संस्कृति का पूरा चित्र इस उपन्यास में है।

जर्जरता का प्रतिक भी इस कथा में है - "बुढ़े पुराने साफे, छीजे अंगरखे, बदरंग होते कालीन घिसी-पीटी पोशाके, दीवारों पर लटकती तलवारे, पुरानी पीढ़ी के धुंधले पडते चित्र, माड़ी की खस्ता बेरंग मेहरावे, हवेली की निलामी, मिरगी के मरीज, रखैलों के बेटे-पिटे हुए मोहरों का जुलूस है यह, जिसे "मय्यादास की माड़ी" कहते।"[57]

इसप्रकार भीष्मजी ने इस उपन्यास में पुरानी अनोखी "माड़ी" का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास सभी दृष्टि से अलग ही है। इसे हम "फानिकल नावेल" की संज्ञा भी दे सकते हैं। इस उपन्यास के सभी पात्र लेखक की कल्पना

की उपज हैं। इसमें उन्होंने उस कालखण्ड का चित्रण किया है, अंग्रेजी शासक भारत में आकर अपनी जड़े स्थिर करते हुए सामन्तवादी लोगों का शोषण कर रहे थे। लेखक ने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक इन सभी परिस्थितियों को इकट्ठा करके प्रस्तुत करने के लिए, दीवान धनपतराय को विषय का आधार बनया है। सामन्ती परंपरा में जन्मे धनपतराय की विगत और आगात चार पीढियों की कहानी इस उपन्यास में कही गयी है। इस उपन्यास की कथा सुनने के लिए वंश-परम्परा तक सीमित रखा है। सामन्ती वंश के लोग अपने परिवार का संबंध राजा परोस से जोड़ते हैं। इस उपन्यास में सामन्त परम्परा का जन्म, उत्थान, अंग्रेजों से रिश्ते, खालसा राज्य का पतन, स्वातंत्र्य मिलवाने के लिए आंदोलन की शुरूआत यह सब दिखाने के लिए लेखक ने लँम्बे काल को उपन्यास का विषय बनाया है।

दीवान धनपतराय को अपने पुरखों के बारे में बड़ा गर्व है। वे कहते हैं हमारा परिवार हुकूमत के खिलाफ कभी नमकहराम नहीं होता। इसमें दीवान मथुरादास, दीवान मय्यादास, दीवान गोकुलदास, दीवान धनपतराय और बॅ॰हुकुमतराय इन एक ही परिवार के सभी व्यक्ति हैं और इन सब के माध्यम से उपन्यास की कथा का विस्तार किया है। इस उपन्यास की अनेक घटनाएँ धनपतराय के परिवार में घटित हुई हैं। कारदार मथुरादास मय्यादास की माड़ी का निर्माण करता है। कारदार मथुरादास का बेटा दीवान मय्यादास है, वह खालसा राज्य का दीवान बना है इसी वजह से उनके परिवार का बहुत उत्साही वातावरण है। दीवान मय्यादास का गोकुलदास नामक भाई है, लेकिन गोकुलदास एक दिन चंद्रा को रखैल बनाकर घर लाते हैं और चंद्रा का बेटा ही धनपतराय है। दीवान धनपतराय ही इस उपन्यास का प्रमुख पात्र हैं। धनपतराय के विचारों के मन के उतार-चढावों ईर्ष्या-द्वेषों से कथा निर्माण किया है। दीवान धनपतराय बड़ा स्वार्थी आदमी है, वह माड़ी की निलामी का बदला चुकाने के लिए अपने दोनों मँझले और पगले की शादियाँ मँसाराम और हरनारायण की बेटियों से कर देता है। विवाह की विस्तृत कथा उपन्यास में है। लेखराज संबंधित कथा और दीवान मय्यादास द्वारा दीवान धनपतराय को माड़ी से निकालना। धनपतराय उँटो का व्यापारी बनता हे, अंग्रेजों

के उँटों के पूँछों की रसीद भेज देता है। फिर उसे अंग्रेज सरकार द्वारा गाँव का लगान वसूलने का अधिकार भी मिलता है। लेकिन यहाँ मय्यादास की माड़ी की निलाम उसका पतन होता है। धनपतराय अपने ही गाँव के किसानों का शोषण करके वह पूँजीपति बना है। अंग्रेजों द्वारा रेलों का आगमन इसके माध्यम से अंग्रेजों की शोषक नीति है, और गाँव के लोगों की अंधश्रद्धाएँ दिखायी है। लेखराज का उसी वक्त गँजमण्डी में आगमन हुआ। सत्ता के लिए लेखराज को हमेशा के लिए कैद, रूक्मिणी की आत्महत्या, बँ॰हुकुमतराय का ऐषाआरामी जीवन और दीवान धनपतराय की मृत्यू। बँ॰हुकुमतराय की स्वतंत्र आंदोलन को दबाने की कोशिश इन सभी घटनाओं को लेकर लेखक ने कथावस्तु की विस्फोटक प्रभाव की उत्कृष्ट रचना बनवायी गयी है।

मय्यादास की माड़ी

कथानक

भीष्म साहनीजी का मय्यादास की माड़ी यह उपन्यास बदलते मूल्यों का इतिहास ही है। इस उपन्यास का प्रारंभ माड़ी के दीवान धनपतराय के चालाक व्यक्तित्व से किया है। उपन्यास का घटनास्थल लाहौर के नजदिक की गजमंण्डी गाँव है। इसमें प्रमुख पात्र के रूप में दीवान धनपतराय को माना है। गजमण्डी की गली के दीवानों को अपने वंश पर बड़ा नाज है। इनमें से कुछ दिवानो का मानना है कि हम सिकंदर और पोरस के परिवार से संबंधित हैं।

गंजमण्डी के गली में मय्यादास की माड़ी है। हर एक दीवान ने बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार अपनी भूमिका निभाई है। दीवान मय्यादास के पिताजी मथुरादास सरकारी कारदार थे। वे खालसा राज्य के दीवान थे। उनकी माताजी बड़ी दयालू औरत थी, उन्होंने मन्नत माँगी थी कि यदि इलाके का दुर्भिक्ष टल गया तो जनकल्याण के लिए हवेली की खुली जमीन में ताल बनवाएगी लेकिन उनकी मन्नत पूरी होने से पहले ही वह परलोक सिधारी थी। दीवान मथुरादास अपनी इमानदारी और विनम्रता के कारण लाहौर और काबूल में तोशाखान के अधिकारी

बन गए। दीवान मय्यादास के कारण उनके घर की खुशी और बढ़ती ही गयी। लेकिन दीवान मय्यादास का जवान बेटा इन्हीं दिनों "जुड़ी" के प्रकोप से इस दुनिया से चल बसा।

गोकुलदास साहुकारी चलाने का काम करता था। उन्हें तीन बेटियाँ होने के कारण उनका मानसिक संतुलन ही बिगड़ जाता है। वह बहुत ही परेशान था ऐसी अवस्था में ही वह अपनी पत्नी और तीन बेटियों के साथ उसके मायके रवाना कर देता है। कितने बरस बीत चुके लेकिन उन्होने अपने बेटियाँ और पत्नी कि पूछताछ नहीं की और उपर से चंद्रा रखैल को घर लाये। उनकी रखैल ज़्यादातर तीन साल ही उनके माड़ी में रही। जिस समय गोकुलदास ने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया उस वक्त वह गर्भवती थी। उससे गोकुलदास को पुत्रप्राप्ति हुई। उसके बेटे का नाम लेखराज था। और चंद्रा रखैले के बेटे का नाम धनतपराय।

गैंजमण्डी के लोगों ने दीवान धनपतराय के "सनकीपन" का वर्णन विस्तार से किया है। वे उसे "दुमकटा दीवान", "रंगीला दीवान", "पागल दीवान" आदि नामों से पुकारते हैं। जब दीवान धनपतराय बीस साल का हुआ उस वक्त वह मय्यादास के पास आया, माड़ी पर अपना हक जमाने के लिए अपना सामान भी लेकर आया था। लेकिन मय्यादास ने उसका सारा सामान माड़ी के बाहर गली में फेंक दिया। सभी लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया। वह इधर-उधर भटकता रहा। इसी दरम्यान अंग्रेजी हुकूमत हिंदुस्थान में आयी। सभी रियासतों के साथ-साथ खालसा रियासत भी अंग्रेजों ने कब्जें में ले ली। खालसा सैनिकों की कमान सालार लालसिंह और तेजसिंह के हाथ में थी। लेकिन लालसिंह और तेजसिंह जंग के मैदान में से जानबूझकर पीछे भाग आए थे। इस युद्ध में सैनिक लेखराज का दोस्त मनोहर मारा गया और लेखराज युद्ध के बाद नीम पागल के समान गाँव-गाँव भटकता रहा। लेखराज की प्रेमिका मोराँ विधवा हो गयी। मय्यादास खालसा राज्य बचाने के लिए हर एक प्रकार की मदद की। उसने अपनी धनदौलत देकर खालसा को बचाने की पूरी कोशिश की लेकिन खालसा राज्य अंग्रेजों के कब्जे में आ गया और कुछ लोगों को भी अपने कब्जे में ले लिया। लालसिंह और तेजसिंह को उन्होंने प्रधानमंत्री बनवाया

और धनपतराय तो पूरी मदद अंग्रेजों को कर रहा था।

धनपतराय को सब लोग "दुमकटा दीवान" कहते हैं। धनपतराय को अंग्रेजों ने उँट की पूँछ काटते हुए पकडा लेकिन उन्होंने यह सोचा वह हमे दुश्मनों की छावनी के उँट भेजता है। अंग्रेजों ने धनपतराय को इनाम के रूप में उसे तीन गाँवों के किसानों से लगान वसूल करने की सनद दे दी। धनपतराय चालाक दीवान था। उसने इन दिनों में बहुत कुछ कमाया और मय्यादास से अपने सारे हिसाब चुका कर दीवान मय्यादास की माड़ी पर अपना कब्जा जताना चाहा। लेकिन उनकी माड़ी का नीलाम किया ठेकेदार मंसाराम ने खरीद ली थी।

धनपतराय चालाक आदमी था। वह उसी माड़ी में रहना चाहता था। इसलिए उसके मँझले बेटे की शादी ठेकेदार मँसाराम की बेटी पुष्पा से करनी थी। चालाक धनपतराय ने मँझले बेटे की नवविवाहिता पत्नी पुष्पा की पालकी वापस लौटा दी क्योंकि उनके तीसरे "मीरगी" से बीमार बेटे "कल्ले" का विवाह भी करना चाहता था। यह सब सुनकर मंसाराम क्रोधित हुए लेकिन एक बेटी के सुख के लिए उन्होंने अपनी दूसरी बेटी का ब्याह कल्ले के साथ कर दिया और दहेज के रूप में धनपतराय को माड़ी भी मिल गयी। और मंसाराम ने माड़ी की नीलामी के पन्द्रह हजार रूपये में लेकर जो अपमान किया था उसका भी बदला लिया।

भीष्मजी ने गंजमण्डी के लोगों की अंधश्रद्धाएँ भी प्रस्तुत की है। अंग्रेजों ने अपने हित के लिए रेल्वे शुरू की थी। ये लोग कहते रेल्वे के कारण जमीन की उपज आधी रह जाएगी। सभी किसान जमीनों पर से भिखारी बनकर निकलेंगे। जाति का फर्क नहीं रहेगा सभी लोग एक-साथ रेल्वे में सफ़र करेंगे, जिस दिन से रेल्वे आयी भैसों का दूध सूखने लगा है। इसप्रकार अंधश्रद्धाएँ लेकर देहान्ती लोग चिंतीत हैं।

लेखक ने इस उपन्यास में भारत में रही अंग्रेजी सत्ता के मकसद को भी स्पष्ट किया है। अंग्रेजी पूँजीपति और शासकों ने हिंदुस्थान की रेल्वे में इसलिए पूँजी लगाई है कि हिंदुस्थान का कच्चा माल अंग्रेज पूँजीपतियों को सस्ता और नियमित

रूप से मिलता रहे, अंग्रेजों का आर्थिक लाभ भी हो। लंदन में एक मंत्री मीटिंग में अंग्रेज पूँजीपतियों को बताते हैं कि भारत में सस्ते मजदूर मिलते हैं। इसके साथ हमें भारत से आर्थिक लाभ उठाने के लिए रेल गाडियों का जाल बिछाना ही हमारे हित का होगा। अंग्रेजी सत्ता हिंदुस्थान के शासन को अपने हाथ में लेने के साथ-साथ हिन्दुस्थान के कच्चे माल पर अपने पूँजीपतियों के कारखाने चलाकर पक्का माल हिन्दुस्थान में ही बेचकर हिन्दुस्थान का आर्थिक शोषण कर रही थी। इसप्रकार भीष्म साहनीजी ने अंग्रेजों की शोषणपूर्ण नीति को बेनकाब करके हमारे सामने उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया है।

धनपतराय ठाट-बाट और बेरहमी से किसानों से लगान वसूल करता है। दीवान धनपतराय कि यह सनक अमीर उमरावों की सनक कही जाती है। दीवान मय्यादास भी अंग्रेजों को तोहफे देकर कोई सनद प्राप्त करना चाहता था। दीवान मय्यादास अंग्रेजी गार्डस् के झूककर अपनी वफादारी बताने लगा तो धनपतराय ने मय्यादास को समझाया इस छोटेसे अंग्रेज के गार्डस है, आपको इससे कुछ नहीं मिलेगा। लाल साहब से मिलाकर मैं आपको सनद दिलवाऊँगा। मय्यादास को दीवान धनपतराय के बातों से घोर अपमान महसूस किया और उनकी दूसरें ही दिन मौत हो गई।

गंजमण्डी में लड़कियों के लिए स्कूल नहीं था। वानप्रस्थीजी ने वहाँ लड़कियों के लिए स्कूल खोल दिया। दीवान धनपतराय के बड़े विक्षिप्त बेटे के साथ आकस्मित रूप से ब्याही गयी गरीब रूक्मों ने अपने अस्तित्व के प्रति एक चेतना दिखाई देती है। वह शिक्षा लेकर अपने जीवन को नया मोड़ देना चाहती। दीवान धनपतराय के मँझले बेटे के मन ही मन में यह बात बैठ गयी कि अगर रूक्मों पढ़ने लिखने के लिए हवेली के बाहर निकलने लगी तो हवेली की इज्जत मिट्ठी में मिल जाएगी। वह यह भी सोचता है, अगर रूक्मों पढ़-लिखकर बड़ी हो गयी तो उसका भाई कत्ला ही एक दिन दीवानी का असली वारिस बन जायेगा और रूक्मों के हाथ में ही घर का कारोबार भी चला जाएगा। और इसी डर से वह अपना पिता दीवान धनपतराय को जमीन-जायदाद का हिस्सा माँग लिया। इसी कारण दीवान धनपतराय

को और उनकी इज़्जत को ठेंस पहुँच गयी।

भीष्म साहनी ने यहाँ पर कथानक को मोड़ दिया है। दीवान धनपतराय की कुछ ही दिनों बाद मौत हो गयी। दीवान धनपतराय की मौत के समय मँझले की पत्नी पुष्पा ने उसकी सारी जमा-जत्था हड़प कर ली। रूक्मों ने नीमपागल पति कल्ले का इलाज लाहौर के अस्पताल में किया। कल्ला अब एक तरह से ठीक हो गया। रूक्मों अब स्कूल के कारोबार में ज़्यादा रूचि लेने लगी थी। दीवान धनपतराय की मौत के बीसेक बरस बाद गंजमण्डी का मुँहल्ला नए रूप में रच बस गया था। अब वहाँ पादरियों का हाइस्कूल, फौज की भरती का दफ्तर स्कूल गया था। कांग के प्रकोप के कारण अनेक लोगों ने यह मुँहल्ला भी छोड़ दिया था। दीवान धनपतराय को लोग भूलने लगे थे। माड़ी में अब दीवान धनपतराय की जगह उसके तीसरे बेटे बैरिस्टर हुकुमतराय ने ले ली थी। बैरिस्टर हुकुमतराय विलायत से बैरिस्ट्री पढ़कर चौदह साल बाद गंजमण्डी लौट आया था। उसने अपने मँझले भाई की खेती की देखभाल करने भेज दिया था। हुकुमतराय ने अंग्रेजी ढंग से माड़ी को सजाया था।

संवेदनशील पात्र लेखराज दीवान मय्यादास का वारिस है। उस पर बहुत ही अच्छे संस्कार और देशप्रेम के प्रति वीरों की गाथाएँ सुनवाकर देशप्रेम के प्रति उत्प्रेरित किया था। लेखराज अंग्रेजों के खिलाफ लड़ता है।

गंजमण्डी में देश के अन्य इलाके की तरह स्वतंत्रता आंदोलन की चिन्गारियाँ फूटना शुरू हो गया। अब दिनों दिन अंग्रेजी शासन के खिलाफ गली में मोर्चे निकलने लगे। बॅ॰ हुकूमतराय अंग्रेजों को स्वतंत्रता आंदोलन दबाने में मदद करता है और प्रजा को कुचलने के लिए लाठी चार्ज का हुक्म देता है और अंग्रेजी डिप्टी कमिश्नर को कहता है "हिंदुस्तानी भीड़ का रंग देख हैन्री। इनमें गुर्दा नहीं है। डन्डा उठाने की देर थी कि सभी दुम दबाकर भाग गए।"[58] इसकी कामगिरी पर अंग्रेज शासन इनाम के रूप में रायबहादुर उपाधि देते हैं।

इस प्रकार उपन्यास की शुरूआत अंग्रेजी सत्ता के उदय से शुरू होती है। आज़ादी की जंग शुरू होने पर समाप्त हो जाती है। इसमें उन्नीसावी शताब्दी का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवेश महत्त्वपूर्ण है। लेखक ने अनेक घटनाओं और पात्रों के माध्यम से प्रसंगों का वर्णन किया है। अंग्रेजी शासन का शोषकपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक नीति को स्पष्ट किया गया है। दूसरी तरफ भारतीय विधवा समस्या, लोगों की अंधश्रद्धाओं का चित्रण किया है। भीष्म साहनी ने पूँजीवादी और व्यापारियों के माध्यम से शोषणपूर्ण नीति को दीवान धनपतराय और ठेकेदार मंसाराम के माध्यम से स्पष्ट किया है। हुकुमतराय के चरित्र से उसकी विद्रुपता प्रकट की है। तिलकराज के माध्यम से आज़ादी की क्रांति का जयघोष करते हैं। अंत में सुबह-सुबह आज़ादी मिलने के बाद हुकुमतराय को निद्रा में ही आवाजे आने लगती है -

"असाँ ते साइयाँ, साडा करम कमा दे,
साडा गुलामी कोलों देस छुड़ा दे।'[59]

इस प्रकार उपन्यास का अन्त हुआ है। उपन्यास की कहानी पूर्वदीप्ति शैली में कही गयी है। उपन्यास का शीर्षक "मय्यादास की माड़ी" अत्यंत सार्थक है।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी ने "मय्यादास की माडी" इस उपन्यास में पुराने कस्बे के माध्यम भूतकालिन भारत के इतिहास को याद किया है। इसमें यथार्थवादी दृष्टि कायम है। जनसामान्य लोगों की अंधश्रद्धा, महामारी, अकाल, बीमारी के फैलाव तथा सामन्तवाद के शोषण का शिकार है। व्यापारी लोग देहातियों का अनाज कम दाम में लेकर, कपडे तथा अन्य वस्तुएँ मँहगे दामों मे बेचते हैं। दीवान धनपतराय जैसे सामन्त अंग्रेजों से रिश्ते स्थापित कर किसानों का शोषण कर रहे हैं। व्यापारी लोग बदली राजनीतिक स्थिति में राजा अमीरचँन्द जैसे पुराने राजाओं से सम्बन्ध तोड़कर अंग्रेजी सत्ता के संबंध स्थापित करते हैं। अंग्रेजी व्यापारियों के साथ ही यहाँ के ठेकेदार व्यापारी मंसाराज जैसे लोगों की तरक्की हो जाती है। जनसामान्य देशभक्ती की खातिर स्वातंत्र्य आंदोलन में हिस्सा लेते हैं। अंग्रेजी सत्ता रेल्वे के माध्यम

से हिन्दुस्थान का शोषण करने के साथ-साथ यहाँ पर अपनी सत्ता कायम करती है। अंग्रेजों ने अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए हिंदुस्थानी लोगों का उपयोग किया। लालसिंह और तेजसिंह जैसे लोगों को प्रधान पद दिया। अंग्रेजों ने अपनी सत्ता का आधार किसानों , बड़े-बड़े जमिनदारों को बनाया है। आर्य समाजी वानप्रस्थीजी जैसे लोगों ने शिक्षा का प्रसार किया। महिलाओं में शिक्षा का प्रसार हो रहा था। औरतें विधवा स्त्रिया शापित जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। दीवान धनपतराय के परिवार में अर्थ को लेकर संघर्ष चलता है। लेखराज जैसे देशभक्त बदहाल जिन्दगी जीने के लिए मजबूर हैं। कुल मिलाकर प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से उपन्यास में उन्नीसवी शताब्दी का भारत का सामाजिक और राजनीतिक जीवन उसकी समस्याओं का सफल चित्रण किया है।

इस उपन्यास में भीष्म साहनीजी ने आम आदमी को जीवन्त बनाकर लेखक ने वातावरण को सजीव बनाया है। उन्होंने घटनाओं का चित्रण बहुत धैर्य से किया है। बहुत सजावट के साथ लिखा है यह उपन्यास।

२.४. **संवाद**

प्रस्तावना

"मय्यादास की माड़ी" इस उपन्यास में कथावस्तु और चरित्र चित्रण के आगे बढ़ानेवाले कथोपकथनों का विस्तृत प्रयोग किया है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों में उच्च कोटि के कथोपकथन देखने को मिलते हैं। पात्र के संवाद से कथावस्तु आगे बढ़ती है, उनके सभी उपन्यास संवादों के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। लेखक खुद पात्रों के निकट जाते और कथानक वे अपने मुख से सुनवाते हैं। पढ़नेवाले . पाठक को कभी-कभी ऐसा लगता है कि कोई उनके साथ गप-शप कर रहा होगा। इतनी सजीवता उनके पात्रों के संवादों में है। उनकी निरीक्षण शक्ति और जागरूकता संवादों के माध्यम से हमारे ध्यान में आती है। पाठक कोई भी पन्ने पर जाए और संवाद पढ़े पाठक का मन कभी रसभंग नहीं होगा। उनके संवाद भी बड़े बड़े नहीं हैं। छोटे छोटे और आसानी से समझ सके। इस तरह इस उपन्यास में कथोपकथन से पाठक में कुछ सुख और

सन्तोष का भाव पैदा होता है।

इस उपन्यास में दीवान मय्यादास और धनपतराय इनके संवादों से सामन्तशाही के पुराने मूल्यों का पता चलता है और अनेक पात्र इस तरह के हैं एक दूसरे के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं।

दीवान धनपत मय्यादास के संवाद से उनकी सामन्तशाही की शैली को लेखक ने स्पष्ट किया है। वह हक के लिए लड़ता हुआ विदूषक मात्र लगता है।

"पा लागूँ ताऊजी।" उसने खड़े खड़े ही कहा "कुछ रक्म चाहिए।"

"आओ धनपत बैठो।"

"बैठने का वक्त नहीं है ताऊजी जागीर का दौरा करने जाना है।"

"कुछ रक्म चाहिए।" दीवान मय्यादास ने सहज पूछा किसलिए रूपया दरकार है, बरखुरदार ?"

धनपत बोला, "माड़ी खरीदना है।"

दीवान मय्यादास की माड़ी····"

मय्यादास सरलता से कहता है, "आजकल साहुकारे में बड़ी मंदी चल रही है। बरखुरदार मेरे पास पैसा होता तो मैं जरूर दे देता।"

दीवान धनपत धमकाता हुआ कहता है, "मैं तो सीधे हाथ अपना हक माँगने आया हूँ, ताऊजी पर लगता है, आप उसे उल्टे हाथ ही देगे।" [60]

दीवानों के संवादों में सहजता, स्वाभाविक वृत्ति उनके वाक्य में कहीं भी कृत्रिमता नहीं दिखाई देती। धनपत के माध्यम से लेखक ने सामंन्तवाद का शोषक चरित्र स्पष्ट किया है। लेखक की दृष्टि में सामंन्तो का अमानवीय चरित्र ज्यादा है।

अंग्रेजों ने हिंदुस्थान में अपने शासन खंबीर बनवाया। उन्होंने सामन्तशाही को खरीद लिया था। अंग्रेजों ने उनके चारों ओर अपनी कूटनीति फैलकर रखी थी। सामन्त सिर्फ नाम के ही नबाब रहे थे। लेखक ने लिखा है -

"सवाल देशप्रेम या देशभक्ति का नहीं था। सवाल नमकहलाली का भी नहीं था, वफादारी का भी नहीं था। सवाल केवल अपने हित का था। किस ओर कदम उठाए कि बच भी जाए और कुछ प्राप्ति भी हो जाए।" [61]

लेखक ने अंग्रेजी सत्ता के मकसद को भी स्पष्ट किया है।

अंग्रेज जब गंजमण्डी में रेल्वे पूँजी लगाकर शुरू की थी इसके पीछे पूँजीपतियों का बहुत बड़ा स्वार्थ छिपा था। और रेल्वे के कारण देहातियों में भी अनुकूल-प्रतिकूल प्रक्रिया बनती रहती है। देहाती लोगों की अंधश्रद्धाएँ भी लेखक ने संवादों से स्पष्ट की है -

"भंगी, चूड़ा-चमार भी इसी गाड़ी में बैठेगा। ऊँची जात का आदमी भी उसी में बैठेगा और रईस साहूकार भी उसी में बैठेगा। नेम-धरम भी कोई चीज है या नहीं। साहूकार भी उसी में और उसका देनदार भी उसी में। मोची, नाई भी उसी में। सेठ-साहूकार की क्या रह जाएगी ? इधर वह बैठा है और इसके सामने कुंभी-तेली बैठा है।" [62]

हमारे देश के पुराने रीतिरिवाज और पुरानी रूढियाँ अंग्रेजों के कारण टूटने लगी थी। सामंन्तशाही के भेदभाव भी लेखक के इस संवाद से स्पष्ट है। देहाती लोग नई व्यवस्था का स्वागत करने के लिए तैयार नहीं हैं। अंग्रेजों को मदद करनेवाले सामंन्तवाद, साहूकार, दीवान बड़े व्यापारी इन लोगों ने ही अंग्रेजी साम्राज्य की नींव बनवायी थी।

धनपतराय जैसे लोग अपने ही लोगों का शोषण करते हुए अंग्रेजी शासक को मदद कर रहा था अपनी जेब भर रहा था। व्यापारी कहता है -

"पहले जिन्स देकर जुलाहे से कपड़ा लेता था, अब जिन्स कहाँ है देने को ? अब तो पैसे का बोलबाला है, सब काम नकद पैसे के बल पर चलता है। और पैसा वह क्यों दे ? इससे तो बेहतर है, साहूकार के पास कपड़ा ले आए और धीरे-धीरे चुकता रहें। लाला गोविंदराम का सितारा चमकाने लगा था। साहूकारी के बल पर उसने तरह-तरह के तरीके ढूँढ निकाले थे। कारनकार ने वह अनाज

कम दाम पर खरीद लेता और बदले में विलायती तैयार माल ऊँचे दाम पर उसी को बेच देता।" [63]

इसके माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है, सामन्तवाद जनसामान्य का शोषण कर रहा है। इंग्लैंड के पूँजीपति और सरकार भी हिंदुस्थान में लगायी पूँजी पर ब्याजसहित मुनाफा वसूल करते हैं। हमारी रोटी हमे बड़े बड़े दाम लगाकर बिकते हैं। इस संवाद से स्पष्ट होता है।

पात्रों के क्रियाकलाप और वार्तालाप

इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने रामदास की गतिविधियों का चरित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है

"पुरोहित भी बूढ़ा हो चला है। उसके घिसे-पिटे झुरियाँ भरे चेहरे को देखते हुए दीवान सोच रहा था कि इस आदमी का कुछ पता नहीं चलता। जितनी जमिन के उपर है, उससे दुगना जमीन के नीचे है। दीवान अपनी पैनी आँखों से देर तक उसके चेहरे को पढ़ पाने की कोशिश करता रहा, फिर मुस्करा दिया, "कुछ और पता चले तो बताना रामदास।" हाँ, गरीबनवाज़ यह तो उड़ती उड़ती खबर ही सूनी है।"

"तू तो उड़ते पंछी को भी हाथ बढ़ाकर पकड़ लेता है पुरोहित, तेरे लिए क्या मुश्किल है।" [64]

इस संवाद से रामदास पात्र पर प्रकाश पड़ता है। वह गंजमण्डी में घटी सब घटनाएँ धनपतराय तक पहुँचाता था। अन्य लोग समझते हैं रामदास थोड़ासा पागल है, उसे सब बातें समझने में काफि जटिल हैं। लेकिन वह तो धनपतराय का चाटूकार है।

"पुरोहित कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा, फिर बुदबुदाती हुई-सी आवाज में बोला, "मनिराम का वक्त आ गया है, गरीबनवाज़।"

"क्या मतलब ?"

"इसका धागा इतना ही लंबा था, बस।···· तूने ही कोई जादू-टूना कर दिया हो तो बात दूसरी है। तेरा क्या भरोसा।"

"उसका वक्त आ गया है महाराज।[65] पुरोहित फिर बुदबुदाया।

इससे स्पष्ट है कि पंडित रामदास भविष्य की बातें जानता है। उनके कहने से दूसरे ही दिन मनिराम की मौत होती है। इससे स्पष्ट है कि रामदास भविष्य जानता और जादू-टोणा भी करता है।

सामन्तवादी जमींदार जनता का आज भी शोषण कर रहे हैं।

"हरनारायण दूर-पार का रिश्तेदार था। इसके अलावा हाथ का साफ और जरूरमंद आदमी था। उन्हीं दिनों उसकी बेटी विधवा हो गयी थी और हरनारायण उसे और उसकी नन्हीं-सी बेटी को अपने इस पुरतैनी, टूटे-फूटे घर में ले आया था। पर बात बनी नही। हरनारायण हिसाब-किताब तो रख लेता था, पर मुजारों को काबू में रखना उसके बस का नहीं था। लगान वसूली के समय कोई मुजारा हाथ-पाँव पकड़ता तो हरनारायण पसीज जाता था, सख्ती से लगान वसूल नहीं कर पाता था। यह काम हरनारायण जैसे गरीब-तबाह,भगवान से डरनेवाले आदमी का नहीं था।···धीरे धीरे उसके विचारों में एक प्रकार का वैराग्य-सा भर गया। जमीन-जायदाद उसे मोह-माया का पंक नज़र आने लगी। रोटी देनेवाला तो भगवान है, मनुष्य तो उसके हाथों निमित्त मात्र है।"[66]

सामान्य व्यक्ति रोटी के लिए क्या सोच सकता है, इस वर्णन से हरनारायण की गरीबी, उसकी लगान वसूल करने की नौकरी और इसके लिए उसके विचार इन बातों को उपर्युक्त संवादों से स्पष्ट किया है।

निष्कर्ष

"मय्यादास की माड़ी" में भीष्म साहनी ने संवादों के माध्यम से सामंन्तवाद के दो पक्ष को उभारा है। पहले उनका अच्छा कार्य फिर बुरा कार्य, शोषकपूर्ण घिनौना चरित्र ही अधिक है। दीवान धनपतराय जैसे दीवान ने अंग्रेजों की मदद की है। कभी युद्ध के समय साज-सामान पहुँचाकर तो कभी उँट बेचकर, कभी किसानों का शोषण कर सनद जमाकर। अपने ही देश में धनपत जैसे लोगों के माध्यम से सार्मन्तवाद का शोषणयुक्त चरित्र स्पष्ट किया है।

लेखक उपन्यास दूसरे खंण्ड में इन सामन्तवाद का -हास किस प्रकार होता है, यह कुछ संवादों से स्पष्ट करता है। अंग्रेजों ने हिंदुस्थान मे सत्ता चलायी उस वक्त से सामन्तों का पतन होने लगा था। अंग्रेजों ने लोगों को खरीदा है। दीवान मय्यादास जैसे लोग गोरी चमडी के हर व्यक्ति को अपनी मान मार्यादा भूलकर सलाम करते हैं और मय्यादास जैसे दीवान अपमान और अपनी बुराई सह न पाने के कारण मर जाते है।

इस उपन्यास में लेखक ने संवादों के माध्यम से अंग्रेज शासन शुरू होने की कहानी है, जिसका आधार शोषण का तत्व ही रहा है। कुछ संवादों से लगता है, लेखक ने आपका मार्क्सवादी दृष्टिकोन रखा है। उनकी कहानी इतिहास की है लेकिन संवादों के माध्यम से हलचल पैदा करने और गहराई इसमें रही है।

संदर्भ सूची

1· साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास, डॉ·पारूकांत देसाई, पृ·112

2· तत्रैव, पृ·112

3· डॉ·नवलजी नालन्दा, "विशाल शब्द सागर", पृ·499

4· भीष्म साहनी "तमस"

5· हिन्दी उपन्यास कला, प्रतापनारायण टंडन, पृ· 2-9

6· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·73

7· हिन्दी उपन्यास विविध आयाम, डॉ·चंदभानु सोनवणे, पृ·349

8· तत्रैव, पृ· 349

9· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·37

10· हिन्दी उपन्यास विविध आयाम, पृ·350

11· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·250

12· तत्रैव, पृ·253

13· तत्रैव, पृ·253-251

14· तत्रैव, पृ·10

15· तत्रैव, पृ·62

16· तत्रैव, पृ·36

18· तत्रैव, पृ·109

19· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·158

20· तत्रैव, पृ·65

21· तत्रैव, पृ· 250

22· तत्रैव, पृ·157

23· तत्रैव, पृ·43

24· तत्रैव, पृ·159

25· आधुनिक भारतीय इतिहास की एक त्रासदी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ·40

25· "हिन्दी उपन्यास कला" प्रताप नारायण टंडन, पृ· 223-224

26· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·41-42

27· तत्रैव, पृ·211

28· तत्रैव, पृ·164

29· तत्रैव, पृ·121

30· तत्रैव, पृ·118-119

31· तत्रैव, पृ·35

32· तत्रैव, पृ·79

33· तत्रैव, पृ·250

34· हिन्दी उपन्यास 1950 के बाद, पृ·80

35· भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, पृ·112

36· "बसन्ती" भीष्म साहनी, पृ·165

37· भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, पृ·142

38· भीष्म साहनी, "बसन्ती", पृ·11

39· तत्रैव, पृ·34

40· तत्रैव, पृ·102

41· तत्रैव, पृ·105

42· तत्रैव, पृ·166

43· हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष, पृ·385

44· "बसन्ती" भीष्म साहनी, पृ·147

45· तत्रैव, पृ·63

46· भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, पृ·161

47· तत्रैव, पृ·161

48· तत्रैव, पृ·161

49· तत्रैव, पृ·161

50· भीष्म साहनी,"बसंती", पृ·25

51· तत्रैव, पृ·28

52· तत्रैव, पृ·145

53· तत्रैव, पृ· 141

54· तत्रैव, पृ· 148

55· तत्रैव, पृ·100

56· तत्रैव, पृ·101

57· तत्रैव, पृ· 94

58· हिन्दी उपन्यास बदलते परिप्रेक्ष्य, डॉ·संदेश बत्रा, पृ·138

59· तत्रैव, पृ·138

60· तत्रैव, पृ·145

61· मय्यादास की माड़ी, पृ·172-73

62· हिन्दी उपन्यास बदलते परिप्रेक्ष्य, पृ·143

63· तत्रैव, पृ·144

64· तत्रैव, पृ· 142

65· मय्यादास की माड़ी, पृ· 11

66· तत्रैव, पृ· 12